माता पिता

रचयिता : त्रिमत के एकैक गुरू
आध्यात्मिक साम्राज्य के चक्रवर्ती, (८८) दश अष्टाधिक ग्रंथकर्ता
इंदू ज्ञान धर्मप्रदाता, संचलनात्मक रचयिता, त्रैतसिद्धान्त आदिकर्ता
श्रीश्रीश्री आचार्य प्रबोधानंद योगीश्वर

www.thraithashakam.org

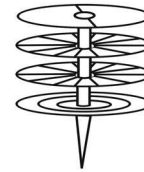

माता पिता

रचयिता : **त्रिमत के एकैक गुरू**

आध्यात्मिक साम्राज्य के चक्रवर्ती, (88) दश अष्टाधिक ग्रंथकर्ता

इंदू ज्ञान धर्मप्रदाता, संचलनात्मक रचयिता, त्रैतसिद्धान्त आदिकर्ता

श्रीश्रीश्री आचार्य प्रबोधानंद योगीश्वर

Published by

इंदू ज्ञानवेदिका

(Estd. in 1978 - Regd.No.: 168 / 2004)

त्रैत शक : 39 प्रथम मुद्र : May - 2017

प्रतियाँ : 1000 खीमत : 60/-

योगीश्वर जी के संचलनात्मक त्रिमत के आध्यात्मिक रचनायें

02 इंदूज्ञानवेदिका के प्रचुरण

01) त्रैत सिद्धान्त भगवद्गीता
02) जनन मरन सिद्धान्त
03) ईश्वर का चिह्न - ९६३
04) धर्म शास्त्र कौनसा है?
05) इंदुत्व की रक्षा करते हैं
06) कौनसा असली ज्ञान हैं?
07) आध्यात्मिक प्रश्न - जवाबात
08) तत्वार्थ के तसवीरों में ज्ञान
09) मंत्र - महिमा (सच या झूट?)
10) गीतम - गीता (गानों में ज्ञान)
11) लु का क्या मतलब? (तेलुगु)
12) हिंदू मत में सिद्धान्त कर्तायें
13) तीन ग्रंथ, दो गुरू, एक बोधक
14) ईश्वर का ज्ञान कब्ज़ा हुआ है
15) हेतुवाद प्रश्न - सत्यवाद जवाब
16) त्रैत सिद्धाँत आध्यात्मिक घंटु
17) मेरा लोचन है तेरा आलोचन है
18) क्या जिहाद का मतलब युद्ध है?
19) क्या ईसा मरगया? या मारेगया?
20) तीन दैव ग्रंथ - तीन प्रथम वाक्य
21) कौनसा पहला है पेड या बींज ?
22) दैवग्रंथ में सत्यासत्य की विचक्षण
23) जिन्न - भूतों के यदार्थ संघटनायें
24) क्या सायिबाबा ईश्वर है या नहीं?
25) क्या श्रीकृष्ण ईश्वर है या भगवान
26) कलियुग (कभी भी युगाँत नही होगा)
27) गालियों में ज्ञान - आशिर्वादों में अज्ञान
28) ज्योतिष्य शास्त्र (शास्त्र है या अशास्त्र?)
29) क्या ईश्वर के आमद का समय ये नहीं है
30) क्या स्वर्ग इंद्रलोक और नरक यमराज्य है
31) हमारे त्योहार (कैसे करना है मालूम है?)
32) कृष्ण मूसा (श्री कृष्ण के मरण की बाद की जिदगी)

33) गुत्ता
34) सुबोधा
35) प्रबोधा
36) समाधि
37) कसौटी
38) फैसला
39) कर्मपत्र
40) आदित्य
41) धर्मचक्र
42) माँ - बाप
43) मत - पथ
44) भाव - भाषा
45) धर्म - अधर्म
46) प्रबोधा तरंग
47) त्रैत सिद्धान्त
48) प्रसिद्ध बोधा
49) सुप्रसिद्ध बोधा
50) वार्तक - वर्तक
51) तत्वों में ज्ञान
52) मरण रहस्य
53) गीता परिचय
54) त्रैतशक पंचांग
55) ईश्वर का चिह्न
56) ईश्वर की मुहर
57) तुझे मेरी लेखा
58) योहान सुवार्ता
59) कथाओं में ज्ञान
60) कथाओं में ज्ञान
61) त्रैताकार रहस्य
62) गुरुप्रर्थना मंजरि
63) देवालय के रहस्य
64) हेतुवाद - प्रतिवाद
65) पुनर्जन्म का रहस्य
66) त्रैताराधना
67) इंदू सांप्रदाय
68) आत्मलिंगार्थ
69) द्राविड ब्राह्मण
70) विश्व विद्यालय
71) प्रवक्तायें कौन?
72) पहेलियों में ज्ञान
73) एक ही दोनों हैं
74) एक बात तीन ग्रंथ
75) सामेताओं में ज्ञान
76) नास्तिक - आस्तिक
77) प्रबोदानंदं नाटिकायें
78) क्या सुलेब ईश्वर है?
79) यज्ञ (सच या झूट?)
80) क्या इंदू ईसायि है?
81) निगूढ तत्वार्थ बोधिनि
82) रूप बदला हुआ गीता

83) सत्यान्वेशि की कथा
84) राजकीय - राजकीय
85) योहान कही हुयी ज्ञान
86) प्रथम दैवग्रंथ भगवद्गीता
87) मतातीत ईश्वर का मार्ग
88) मत बदलना दैवद्रोह है
89) आज्ञान में उग्रवाद बीज
90) एक व्यक्ति में दो कोण
91) मरण के बाद की जीवित
92) हिंदूमत में ही कुलविवक्षा
93) उग्रवाद स्वर्गकेलिये ही है
94) प्रतिमा विग्रह - दैव दैय्यमु
95) कौनसे मत में कितना मतद्वेष?
96) मध्यम दैंवग्रंथ में ज्ञानवाक्य
97) अंतिम दैंवग्रंथ में ज्ञानवाक्य
98) अंतिम दैंवग्रंथ में वज्रवाक्य

भाषा में पांडित्य को छोडकर, भाव में पांडित्य को देखनेवाला ही असली ज्ञानी है

01) माता
02) माता -पिता
03) मत - पथ
04) युग - योग
05) पैत्य - सैत्य
06) प्रभू - प्रजा
07) इंदू - हिंदू
08) बात - दवा
09) भक्ति - भय
10) भाव - भाषा
11) धर्म - अधर्म
12) नैज़ - सहज
13) प्रभू - प्रभुत्व
14) सुख - आनंद
15) दश - दिशायें
16) स्त्री - पुं/लिंग
17) पुस्तक - ग्रंथ
18) द्राविड - आर्य
19) भूत - महाभूत
20) ज्ञान - विज्ञान
21) प्रकृति - विकृति
22) मरण - शरीर
23) मुर्गा - पादरस
24) पैदाहोना - मरना
25) सृष्टि - सृष्टिकर्ता
26) द्वितीय - अद्वितीय
27) मायक - अमायक
28) सेकू वलि - कूलिसेवा
29) देश दोखा - देह मह
30) माँ बाप - गुरू दैव
31) गोरू - गुरू (नाखुन)
32) दिव्य खुरान - हदीस
33) दादा
34) आत्मा
35) समाधि
36) टकलू
37) यादव
38) भगवान
39) सांप्रदाय
40) कलियुग
41) वेलुगुबंट
42) ज्ञानशक्ती
43) ६-३=६
44) गुरुपौर्णमी
45) संचित कर्मा
46) इंदू महासमुद्र
47) त्रैत सिद्धान्त
48) कर्म का मर्म
49) श्रीकृष्णाष्टमी
50) सात आकाशें
51) तीन ग्रंथ
52) चमत्कार आत्मा
53) चंद्राकार (गंजा)
54) गुरू कोन है?
55) श्रीकृष्ण कौन है?
56) १ २ ३ गुरूपौर्णमी
57) एकता - एकाग्रता
58) श्रीकृष्ण जन्म मधुरा
59) आत्मा का काम
60) मतों में पवित्रयुद्ध
61) पुनर्जन्म का रहस्य
62) खिलानेवाली आत्मा
63) तेलुगु में तीन - छ - नौ
64) नाटक करनेवाली आत्मा

65) शैव - वैष्णव
66) जीर्ण+आशय
67) निदर्शा - निरूप
68) सेवा की फीसद
69) कौनसा धर्म है?
70) अधर्म आराधनायें
71) कौनसा शास्त्र है?
72) क्या ईश्वर का कोइ
73) काय - फल - काया
74) दैवज्ञान - माया महत्य
75) तीन पैदायिश - दो जगह
76) क्षमा न कियेजानेवाला पाप
77) ज्ञान के पास जत्तन रहना!!
78) बाल आत्मा की निशान है
79) एक निरंजन - अलकनिरंजन
80) हरिपैर - हरहाथ (हथेलि - तलवा)
81) बिना गुरू की विद्या अंधी विद्या ह
82) तीन निर्माण - एक परिशुभ्रता
83) सहज मरण - तात्कालिक मरण
84) मेघ एक भूत - रोग एक भूत है
85) प्रपंच की श्रद्धा - परमात्मा की श्रद्धा
86) कर्मवाला कृष्ण -बिना कर्मवाला कृष्ण
87) गुरू वह है जो पहचाना नहीं जाता
88) इच्छादीन कार्य - अनिच्छादीन कार्य
89) इच्छादीन कार्य - अनिच्छादीन कार्य
90) योगीश्वर जी का जन्मदिन का संदेश
91) बाहर का समाज - अंदर का समाज
92) सीने पर मोहर - माँ बाप की निशानी
93) स्वार्थ राजकीय (स्व + अर्थ राजकीय)
94) पैदायिश का दिन किसी को नहीं आता
95) आटा - दोबूचलाटा (खेल - छुपाछुपी का खेल)
96) टक्कु टमार, इंद्रजाल महेंद्रजाल, गजकर्ण गोकर्ण

97) भय
98) गुरुचिह्न
99) मतद्वेश
100) धर्म चक्र
101) पुरुषोत्तम
102) हान्कनेवाला
103) अर्थ - अपार्थ
104) ग्रंथ - बोधा
105) प्रज - मानव
106) दंत - अंत
107) शव - शिव
108) अदुरू - बेदुरू
109) भक्ति - श्रद्धायें
110) आस्ती - दोस्ती
111) दैवग्रंथ
112) ग्राहिता शक्ति
113) त्रैतशक संतक
114) कालज्ञान के वाक्य
115) ईश्वर की आज्ञा - मौत
116) मत सामरस्य
117) तेरे पीछेवाला
118) माया मर्म - आत्म धर्म
119) कालज्ञान के वाक्य
120) ज्ञान कब्जा हुआ है
121) क्या ईश्वर एक है! या दो!!
122) आध्यात्मिक प्रश्न - जवाबात
123) अंतिम दैवग्रंथ में प्रथम वाक्य
124) मोक्षमु - मोसमु (मुक्ति - धोका)
125) श्रीकृष्णमरगया? या मारेगया?
126) अक्षर ज्ञान

प्रबोधाश्रम (श्रीकृष्ण मंदिर)

चिन्न पोडमल (ग्राम), ताडिपत्रि (मं), अनंतपुर (जिला) A.P
Cell : 98665 12667, 99516 75081, 94903 63038

इंदूज्ञान वेदिका शाखा
अनंतपुर टौन, A. P
Cell : 97059 59390, 99855 80099

के. लक्ष्मीनारायणा चारि (प्रसिडेन्ट)
मार्केट स्ट्रीट, धर्मवरम, अनंतपुर (जि)
Cell : 94405 56968,
92900 12413, 94406 01136

आदिशेषय्या (टीचर) (प्रसिडेन्ट)
गुत्ति, अनंतपुर (जि)
Cell : 9491362448, 7382986963

पि.आदिनारायण
मुद्दिरेड्डि पल्ली (ग्रां), अनंतपुर (जि)
Cell : 9440745800, 7259851861

ए.नागेंद्र (प्रसिडेन्ट)
क्रोत्त चेरुवु (ग्रां, मंडल) अनंतपुर (जि)
Cell : 9493622669, 9959316410,
9949995090

टि.वि.रमणा (प्रसिडेन्ट)
मुदिगुब्बा (ग्रां), अनंतपुर (जि)
Cell : 9440980036, 07406039453

पि.नागय्या (प्रथम मेंबर)
वीकर सेक्षन कालनी, कर्नूल टौन
Cell : 9440244598, 9849303902

एन.वि.रामकृष्ण (प्रथम मेंबर)
बोद्दाम (ग्रां), राजाम (मं), श्रीकाकुलम
Cell : 9494248963, 9959779187

इंदू ज्ञानवेदिका (Head office)
चैतन्यपुरि, दिलसुख नगर, हैदराबाद,
तेलंगाना राष्ट्र. Cell : 9491040963,
9032963963, 9848590172

वि.शंकर राव (टीचर) (प्रसिडेन्ट)
अशोक नगर, विजयनगर (जिल्ला)
Cell : 9703534224, 9491785963

तुलसी राव
टि.टि.डि कल्याण मंडप, विजयनगर
Cell : 9441878096, 9030089206

यस अनिल कुमार
काकिनाडा टौन, तूर्पु गोदावरि जिल्ला
Cell : 9866195252, 9640526520,
73960 38888

बंडारु सत्यनारायण
मामिडि कुदुरु (मं), तू, गोदावरी जिल्ला
Cell : 95535 07141, 84669
20419, 94902 95577

यन.वि.रामकृष्णा (प्र.सभ्य)
बोद्दाम (ग्रां), राजाम (मं), श्रीकाकुलम (जिल्ला)
Cell : 9494248963, 9959779187

इंदू ज्ञानवेदिका शाखा
मल्लिगां (ग्रामं), कोत्तपेट (पो), रायगड (जि),
ओडिसा (राष्ट्र). Cell : 09437527499,
09437527470, 09437975781

इंदू ज्ञानवेदिका शाखा
विशाख पट्टणम, आन्ध्रप्रदेश
Cell : 76749 79663, 94400 42763, 89777 13666, 92478 26253

एन.बि.नायक (प्रथम मेंबर)
पेदमडका, अगनंपूडी, विशाख पट्टणम (जि)
Cell : 73964 92239, 92483 15309, 73862 12589

वि.सि.वर्मा आनंदाश्रम
मञ्जिवलस(ग्रां, पोस्ट), भीमिलि (मं), विशाख पट्टणम (जि)
Cell : 94415 67394, 95021 72711

वि.शंकर राव (टीचर) (प्रेसिडेन्ट)
अशोक नगर, विजयनगर (जि)
Cell : 9703534224,9491785963

तुलसी राव
तळळ दत ग.ग.ऽ.कल्याण मंडप, विजयनगर (जि)
Cell : 9441878096,9030089206

डा बि धर्मलिंगाचारी (प्रथम मेंबर)
श्री कनकमहा लक्ष्मी क्लिनिक, (कोट), विजयनगर (जि).
Cell:08966-275208, 9704911737

टि.उदयकुमार (प्रेसिडेन्ट)
भीमवरम १ टौन, पशिचम गोदावरी जिल्ला
Cell : 9948275984,7386433834

यम मुरलि
जड्चर्ला, महबूब नगर जिल्ला
Cell : 97057 16469

इंदू ज्ञानवेदिका शाखा
विशाख पट्टणम, आन्ध्रप्रदेश
Cell : 76749 79663, 94400 42763, 89777 13666, 92478 26253

यम अल्लिपीर
मडकशिरा, अनंतपुर (जिल्ला), आं. प्र.
Cell : 89780 58081

शेक षफी
चेन्नै, तमिलनाडु राष्ट
Cell : 09445554354

शेक इब्राहीम
कर्नूल टौन, आंध्रप्रदेश
Cell : 70950 08369

शेक अमीर अली
नल्गोंडा जिल्ला, तेलंगाण राष्ट
Cell : 9505 989898, 9505768181

श्री प्रबोध क्लिनिक यु.जनार्दन
आटोनगर, बस्टान्ड रोड, कोयिल कुंट्ला (मं), कर्नूल (जिल्ला). Cell : 9491851911

अनमल महेश्वर (प्रेसिडेन्ट)
चवटपाल्यम (ग्रां), गूडूरु, नेल्लुरु जिल्ला
Cell : 9494631664, 9490809181, 8106065300

रौतु श्रीनिवास राव (प्रेसिडेन्ट)
एटुकूरु रोड, दर्गा मान्यम, गुंटूर जिल्ला
Cell : 9948014366, 9052870853

नर्रा श्रीनिवास रेड्डि
कंभं (मं), प्रकाश्म जिल्ला
Cell : 9849883261, 8142853311, 8187084516

डा.यम.वेंकटेश्वर राव (प्रेसिडेन्ट)
शान्ति नगर, नेल्लूरु जिल्ला M.D(Acu)
Cell : 9440615064, 9246770277

यन.बी नायक (प्र.सभ्य)
पेदमडक, अगनंपूडी, विशाक पट्नम (जिल्ला)
Cell : 92483 15309,
73862 12589, 73964 92239

नायुडु
ख.क.ऊ कोलिमि गुंड्ला, कर्नूल (जिल्ला)
Cell : 9440490963

तलारि गंगाधर
गुडिपाटि गड्डा, नंद्याल टौन.
Cell : 9491846282, 7671963963

वै.रविशेखर रेड्डि
पेद्द कोट्चाल (ग्रमं), नंद्याला (मं)
कर्नूल जिल्ला. Cell : 9440420240,
9885385215

टि.उदय कुमार (प्रसिडेन्ट)
भीमवरम वनटौन, पश्चिम गोदावरी जिल्ला.
Cell : 99482 75984, 73864 33834

इंदू ज्ञान वेदिका शाखा
विशाक पट्नम, आंध्रप्रदेश राष्ट्र.
Cell : 76749 79663, 94400 42763,
89777 13666, 92478 26253

इंदू ज्ञान वेदिका शाखा
कोत्तकोट, महबूब नगर (जिल्ला)
Cell : 87905 58815,
9440655409, 9701261165

पि रामकृष्णारेड्डि
कोलिमि गुंड्ला, कर्नूल (जिल्ला)
Cell : 9666202963

घडियं.पेद्दिरेड्डि (प्र.सभ्य)
नरसरावपेट, गुंटूरु जिल्ला
Cell : 9989204097, 9849555738

यम जैराम नायक
पद्मावती कालनी, महबूब नगर टौन.
Cell : 70321 74830, 90009 16419

सायि शंकर श्रेष्टी (टीचर)
अच्चं पेट, महबूब नगर जिल्ला.
Cell : 9948947630, 9640717574

पोटु वेंकटेश्वर्लु (प्रेसिडेन्ट)
हुजुर नगर, नलगोंडा जिल्ला.
Cell : 9848574803, 9866423853

बि.देवेंदर
भुवनगिरि टौन, नल्गोंडा जिल्ला.
Cell : 76800 65963,
9704885964, 9848741703

इ.श्री नाथ श्रेष्टि
गणेश स्ट्रीट, जनगां, वरंगल जिल्लाह.
Cell : 9573552963, 8096958359

ए.राघवेंद्र श्रेष्टि
श्री कृष्ण मेडिकल्स जनरल्स, पटेल नगर, ३ क्रास होस्पेट, बल्लारि जिल्ला, कर्णाटका राष्ट्र.
Cell : 097318 16452, 096111 33635

A.V LAKSHMI NARAYANA
San Antonio, TEXAS,U.S.A
+1(210)714 9696, +1(210)527 3436

K. SIVA KRISHNA
Atlanta, GEORGIA, U.S.A
+1 (404) 551 3297, +1 (470) 658 7635

माता पिता

शायद दुनिया में ऐसा कोई व्यक्ति ही नहीं रहता होगा जिसे माता पिता कहलानेवाली बात मालूम न हो। तो अब सवाल यह है कि हम में से कितने लोग ऐसे हैं जिन्हे यह मालूम हैं कि माता पिता मतलब कौन है या किसे माता पिता कहनी चाहिये? तो मेरी नज़र में जवाब थोडा मुशकिल सा रहता हैं। बहुत से लोग ऐसा कह सकते हैं कि यह कैसा सवाल हैं? दुनिया में ऐसे लोग कैसे होसकते हैं जिन्हे माता पिता के बारे में मालूम न हो! तो हम यह कह रहे हैं कि यहीं पर बहुत ही बडी विषय (रहस्य) है जिसके बारे में हमलोगों को कुछ नहीं मालूम। अगर हम इस बात पर गौर करें कि अबतक मनुष्यों को कितना मालूम हुआ और कितना मालूम नहीं हुआ यानि मालूम करनेवाले विषय कितने हैं इस बात पर तफसील से बयान करलियें तो, यह कहसकते हैं कि मनुष्य को जितना मालूम हुआ उससे कई गुना ज्यादा मनुष्य को बहुत से विषय नहीं मालूम। अबतक हमलोगों को जो मालूम है उसके बारे में बयान करलेते हैं। अगर एक मनुष्य पैदा हुआ हैं मतलब उसे माता पिता ज़रुर रहना ही होगा। विज्ञान के प्रकार वैज्ञानिक,भौतिक शास्त्रवेत्तायें कहते हैं कि एक स्त्री के गर्भाशय में अंड कहलानेवाले रजोकण के साथ, पुरुष का वीर्य कण जब मिलता हैं तो स्त्री को गर्भ तय्यार होकर, उस गर्भ में शिशु नौ महीने बढकर, दसवी महीने में प्रसवकिया जा रहा हैं यानि शिशु का शरीर बाहर निकल रहा है। इसतरह पैदा हुआ शिशु के माता पिता कौन है? पूछने से सब कहते हैं कि वह स्त्री जिसने इस बच्चे को जना उसकी माता हैं और वह पुरुष जिसने स्त्री गर्भ को वीर्यकण पहुँचाया वह शिशु का पिता है। यही वह सच है जिसे प्रपंच ने मालूम किया।

समाज में एक स्त्री बीवी की तरह है तो, शोहर की तरह पुरुष हैं। स्त्री पुरुष दोनों बीवी शोहरों की तरह रहते हुए, उनको

जो संतान हुआ उनकेलिए वे माता पिता की तरह व्यवहार कर रहे हैं। अगर हम समाज में किसी भी मनुष्य से यह सवाल पूछेंगे कि तेरे माता पिता कौन है? तो वह बिना जिजकते हुए अपने माता पिता के नाम बतायेगा। कौनसे भी अप्लिकेषन फारम में क्यों न हो जिस जगह में पेरेंट्स का कालम (Parent's Column) होता हैं वहाँ पर एक स्त्री के नाम को माता के स्थान में, एक पुरुष के नाम को पिता के स्थान में लिखता है। माता पिता सजीव से रहें, या मरकर बहुत वक्त होजाने के बाद भी मनुष्य अपने माता पिता के नामों को ही बतायेगा। लेकिन माता पिता के विषय में ज़रा भी उससे किसी भी तरह की भूल नहीं होगी। मनुष्य मरते दम तक अपने माता का नाम हो, पिता का नाम हो नहीं भूलता। प्रपंच में हर मनुष्य से बहुत ही खरीब रिश्ता या संबंध रखनेवाले सिर्फ माता पिता ही हैं। यह कहसकते हैं कि जब एक मनुष्य तकलीफों से गुज़रता है या उसके साथ कुछ हादसा होता है या जब वह मरजाता है तो उसके बारे में सबसे ज़्यादा उसके माता पिता ही दुखित होते हैं। यह हमारा बेटा है कहते हुये जितना प्रेम माता पिता जताते हैं उतना ही प्रेम बेटे को भी रहता है कि यह मेरे माता पिता हैं। यह हमेशा प्रपंच में रहनेवाला तरीका हैं। किसी भी तरह का ज्ञान न रखनेवाले मनुष्य को भी यही तरीका होता हैं। सब विषयों में अखल कम रहने के बावजूद भी कम से कम माता पिता को तो पहचान सकेगा, उन्हे कभी भी नहीं भूलता। इसतरह से प्रपंच में माता पिता को उनके संतान से अनुबंध जुडा हुआ है। यह बंधन को कोई तोड नहीं सकता।

बाहर के समाज में और भी कुछ लोग माता पिता को बहुत ही पूज्य भाव के साथ देख रहे हैं। माता पिता को दैव समान समझकर पूजा करनेवाले भी हैं। उनके हिसाब में जो पूजा के लायक

है उनमें से पहलीवाली माता, दूसरावाला पिता, तीसरावाला गुरु, चौथावाला ईश्वर है कहते हैं। उनके भाव में पिता से भी ज़्यादा पूज्यनीय माता है, माता पिता के बाद गुरु, गुरु के बाद ईश्वर हैं कहते हैं। देखा आपने इनके हिसाब में तो ईश्वर ही आखरीवाला हुआ है। कुछ लोग तो मातृदेवोभवः, पितृदेवोभवः, आचार्य देवोभवः कहते हुये आखिर में ईश्वर को ही पूरा छोडदिए। कहरहे हैं कि इन तीनों की पूजा करें तो काफी है। कुछ लोग तो ऐसे कहते हुये कि माता पिता से बढकर कोई ईश्वर नहीं हैं, सुबह सुबह उठते ही माता पिताके पैरों को नमस्कार करनेवाले भी कुछ लोग हैं। इसतरह माता पिता कहनेवाले सामाज में प्रत्येक स्थान पर रहने पर भी, कुछ लोगों के नज़र में तो वे दैवसमान हैं।

माता पिता पवित्रभाव के साथ रहनेवाले होने पर भी कुछ लोगों में वह पवित्रता नहीं रह रही हैं। कुछ माता पिताएँ ऐसे हैं जो अपने बच्चों के ओर बेरहमी (सख्त) से बरताव करनेवाले भी हैं। उसीतरह माता पिता अच्छे लोग होने पर भी उनके बच्चे माता पिता को लेकर बहुत ही दुर्मार्ग (अन्याय) के साथ पेश आनेवाले भी हैं। बच्चे अच्छे होने पर भी माता पिता बच्चों के ओर बेरहमी के साथ पेश आनेवाले बहुत ही कम होते हैं। लेकिन यह कहसकते हैं कि माता पिता अच्छे लोग होने पर भी ऐसे बहुत से बच्चे हैं जो अपने माता पिता को लेकर बहुत ही सखती से (दुमार्ग के साथ) पेश आते हैं। यह कहसकते हैं कि माता पिता अपने बच्चों पालना प्रकृतिसिद्ध हैं। हर माता पिता यही समझते हैं कि जितना अपने पास है उसमें ही अपने बच्चों को अच्छी तरह पालके, विद्याबुद्धियाँ सिखवाकर समाज में इज़्ज़त से जीना चाहिए। ऐसा ही महनत करके भी हो खुद खाये या न खाये हमारे बच्चे खाना चाहिए कह कर देखते हैं। इसतरह बहुत

ही महनत करके बच्चों को बडा करने के बाद, वे बच्चे अपने माता पिता को ही दुख देते हुये, अपनी खुद की सुख को देखलेने वाले बहुत से लोग समाज मैं हैं। माता पिता पर प्यार रहें या न रहें तो भी कोई बात नहीं हैं मगर जवानी आनेतक बिना किसी तरह के कमी के उन्होने पाला पोसा है इसके बदले में माता पिता को पालने की ज़िम्मदारि बच्चों पर होती है। ऐसी ज़िम्मदारि को भूलजाना प्रपंच के पद्दती मैं अन्याय होता हैं। बाहर के समाज से संबंधित रखनेवाले नीती न्याय के प्रकार देखें तो बुढापे की हालत में आकर खुद अपने आप ज़िंदगी न जी सकने वाले माता पिता को न पालना (यानि उनकी देखभाल न करना), उनके अच्छे बुरे का खयाल न रखना अक्रम और अन्याय होता हैं। माता पिता बुरे होने के बावजूद भी उन्हे पालना पोसना समाज में उनकी संतान की ज़िम्मदारी हैं। अबतक वह विधान के बारे में हमने बयान करलिया हैं जो बाहरवाली समाज से संबंदित हैं। अब अगर आध्यत्मिक संबंदित विधान के प्रकार बयान करलिए तो वह इसतरह हैं।

हर मनुष्य के लिए माता पिता कहलानेवाले दो क़िस्म से मौजूद हैं। अब कोई भी इसतरह सवाल करसकता हैं कि दो प्रकार के माता पिता कैसे होसकते हैं? सबके लिए तो माता एक ही होती है और पिता भी एक ही होता हैं ना! उस केलिए हमारा जवाब यह है कि! तफसील के साथ बयान करलिये तो जो माता पिता प्रकृती के विधान में है वे अलग हैं, ऐसा ही जो माता पिता परमात्मा के विधान में है वे अलग हैं। बाहर की समाज संबंध के प्रकार जो माता पिता दिख रहे हैं वे प्रकृती विधान के माता पिता हैं। ऐसा ही कह सकते हैं अंतर्गत आध्यात्मिक संबंदित, नज़र न आनेवाले माता पिता अलग हैं। वास्तव में यह कहसकते हैं कि हर एक केलिए दो प्रकार के माता

पिता हैं एक दिखनेवाले और दूसरे नहीं दिखनेवाले। जिन्हे आध्यात्मिक ज्ञान मालूम हैं वे सब दो प्रकार के माता पिताओं को जानते हैं। जिन लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान नहीं हैं वे तो सिर्फ दिखनेवाले माता पिताओं के बारें में ही जानते हैं। आध्यात्मिक, अनाध्यात्मिक कहें तो शायद आपको ठीक से समझ में नहीं आसकता। इसीलिए जिस तरीके से आपके समझ में आता हैं उसी तरीके में बयान करलेंते हैं। यह तो सब जानते ही हैं कि हर मनुष्य केलिए एक जीवित (जीवन या ज़िदगी) होती है। जिंदगी पैदाइश से प्ररंभ होकर, मरण से खत्म होरही हैं। पैदाइश से मौत तक गुज़रा हुआ वक्त को एक जीवित काल कहते हैं। पैदाइश में नया शरीर आरहा हैं, जो शरीर जबतक था वह मरण में खत्म होजारहा हैं। एक जब नया शरीर आने पर भी, बाद में मरण में पुराना शरीर जाने पर भी, शरीर में निवास करनेवाला जीव तो वैसे का वैसा ही हैं। इसके प्रकार यह मालूम होजारहा हैं कि जीवित(जीवन) में **जीव शाश्वित हैं, शरीर अशाश्वित** है। एक सजीव मनुष्य को डिवैड कर के देखें तो यह मालूम हो रहा हैं कि जीव अलग है और शरीर अलग हैं। **जीव + शरीर = एक मनुष्य है,** कोई भी इस बात का इनकार नहीं कर सकता। एक मनुष्य जो जीव, शरीर कहलानेवाले दो भागों में हैं, उस मनुष्य में शरीर सिर्फ कुछ वक्त ही रह रही हैं। इसलिए मालूम हो रहा हैं कि शरीर नाश होने पर भी जीव नाश नहीं हो रहा है, फिर वह बादवाली जन्म में दूसरे नये शरीर को पा रहा है। एक जीवित (ज़िदगी) में शरीर को, जीव को (दोनों को) लेकर देखें तो यह मालूम हो रहा हैं कि दोनों के भी माता पिता हैं। अगर हम ऐसा कहते हैं कि एक सजीव शरीर को माता पिता है तो उसका मतलब यही हुआना कि इधर शरीर, उधर जीव दोनों के भी माता पिता हैं।

हमलोग यह तो बतासक रहे हैं कि फलाना लोग ही एक सजीव मनुष्य केलिए माता पिता हैं। ऐसा ही उन्हे (यानि उन माता पिताओं को) दिखा पा रहे हैं। जब एक नौकरी केलिए अप्लै करते हैं तो उसमें भी जिस जगह में माता पिता का नाम का कालम होता हैं वहाँ शरीर के संबंदित माता पिताओं के नामों को ही लिख रहे हैं। हर मनुष्य को अपने शरीर से संबंध रखनेवाले माता पिताओं के नाम ही मालूम हैं। लेकिन यह नहीं मालूम है कि अपने असली माता पिता कौन है, और उनके क्या नाम हैं। हर मनुष्य अपने आप को देखकर यही समझ रहा हैं कि उसका शरीर ही वह खुद है (यानि मनुष्य समझरहा है कि पूरे शरीर में सिर्फ वही है कोई और नहीं है लेकिन सच तो यह है कि शरीर अलग है,जीव अलग है, जीव शरीर में सिर्फ एक जगह पर है और इस जिस्म का मालिक **आत्मा** है)। इसीलिए शरीर के संबंदित माता पिता को ही खुद के माता पिता की तरह कह रहा हैं। वास्तव में यह बात कोई भी नहीं जानता कि अपने माता पिता अलग हैं। गलती से अपने शरीर के माता पिता को ही,अपने (जीव के) माता पिता समझना होरहा हैं। जो व्यक्ति समाज में चाहे कितने भी बडे दर्जे (पोसिशन) पर क्यों न हो, चाहे वह देश का राजा हो, मंत्री हो, विज्ञानवेत्ता हो, बडा मेधावि क्यों न हो कोई भी हो, कितना भी महान क्यों न हो वे अपने माता पिता को नहीं जानते। यह बात को तो भूल ही गए हैं कि उनके माता पिता मौजूद हैं। वास्तव में खुद को ही भूल कर, अपने शरीर को ही खुद की तरह हिसाब करलेकर, खुद को ऐसा समझ रहा हैं कि मैं लम्बा हूँ, मैं गिड्डा हूँ, मैं काला हूँ या गोरा हूँ। वास्तव में कोई भी मनुष्य को यह बात याद या खयाल नहीं हैं कि मैं शरीर नहीं हूँ, मैं अलग और मेरा शरीर अलग है। क्यों कि उसने यह बात को याद नहीं रखने की

वजह से खुद को अपना शरीर ही मान कर, अपने शरीर के माता पिता को ही अपने माता पिता समझलेना हो रहा हैं।

पैदाहुआ हर मनुष्य भी ऐसा ही क्यों समझ रहा है? तो सिर्फ इसका कारण एक ही एक है वह यह है कि असल में मनुष्य नहीं जानता कि उसके असली माता पिता कौन है। ऐसे समय में स्वयं ईश्वर ही जीव के माता पिता के बारे में बताना पडा। जब भगवद्गीता को कहा उसी संदर्भ में ईश्वर ने ही बताया था कि असल में जीव के माता पिता कौन है। भगवद्गीता में गुणत्रय विभाग योग में तीन, चार श्लोक ऐसे हैं।

श्लोक ३) ममयोनि र्महद्ब्रह्म तस्मिन गर्भम दधाम्यहम ।
संभव सर्व भूतानाम ततो भवति भारत ।।

श्लोक ४) सर्व योनिशु कौन्तेय! मूर्तयः संभवंतियाः ।
तासाम ब्रह्म महद्योनिः अहम बीजप्रदः पिता ।।

इन श्लोकों के भाव के प्रकार ईश्वर ने जो कहा वह ऐसा है। वह प्रकृती जो विशाल, बडी और स्त्री स्वरुप है वही योनि की तरह (गर्भ की तरह) हैं। मैं ही ऐसा कर रहा हूँ कि वह गर्भ की धारण करें। इसीलिए सर्व प्राणियाँ पैदा होरहे हैं। उसने यह कहा कि चाहे ज़मीन पर कोई भी जीवरासि (प्राणि) क्यों न हो वह किसी भी माँ के गर्भ से पैदा क्यों न हो, विविध रुपों में दिखनेवाले सब जीवरासियों (प्राणियों)के लिए माता प्रकृती है तो मैं उनका बीजदाता यानि पिता हूँ। भगवान ने गीता में जो कहा उसके प्रकार चाहे जीव कौनसे भी शरीर के गर्भ में पैदा क्यों न हो उस शरीर में पंच भूतवाली प्रकृती जो मूल धातु हैं वह माता है तो उस प्रकृति को जिसने चैतन्य कहलानेवाली बीज को दिया हैं वह ईश्वर जीवात्मा का पिता हैं। इससे

यह मालूम होता हैं कि हम बहुत ही अज़ीम वाले ईश्वर के स्वयं बेटे होकर, बडी ताकत रखनेवाली प्रकृती की संतान होकर भी, मनुष्य अपने दर्जे को भूलजाकर अपने आप को अशाश्वित शरीर की तरह कम्पार करलेके बहुत ही छोटा होगया हैं।

अगर शाश्वित माता पिता के बारे में मालूम करलिए तो मनुष्य शाश्वितवाली मोक्ष को पासकता हैं। क्योंकि वह अपने आप को अशाश्वित शरीर की तरह हिसाब करले ने से मनुष्य अशाश्तिवाला होगया हैं। अशाश्वित जन्म पा रहा हैं। माया जीव को ऐसा भ्रम में रख रही हैं कि तू सिर्फ अशाश्वित वाला शरीर है (शरीर अलग तू अलग नहीं है सबकुछ तू ही है तेरे शरीर में तेरे सिवा कोई और नहीं है)। इसतरह उसे यकीन दिला रही हैं। मनुष्य अपने असली पिता के बारे में मालूम करने केलिए, जबतक वह अपने पिता पर पूरे तरीके से श्रद्धा नहीं रखता तब तक माया मनुष्य को वह कौन है इस बात का पता लगने नहीं देती और मनुष्य को ऐसा भ्रम में रखती हैं कि उसका शरीर ही वह खुद हैं। मनुष्य को यह विषय मालूम नहीं है ना कि प्रकृती ही मनुष्य की माँ हैं! माँ प्रकृती ही दूसरा रुप धारण करके माया की तरह बुलाई जारही हैं। शरीर में गुणों के रुप में रहनेवाली माया मनुष्य को ईश्वर के ज्ञान की तरफ जाए बगैर कर्मों में ही डुबो दे रही हैं। माया माता के ज़रिए तय्यार की गयी जाल में फसा हुआ इनसान उस जाल में से बाहर नहीं आ पा रहा हैं। माया के जाल में बारह प्रकार के धागे मौजूद हैं। एक एक धागे का हिस्सा मनुष्य से भी हर तरह से ताकतवार है। मनुष्य को बाँधने के लिए माया ने जिस जाल का इस्तेमाल किया उसमें एक एक प्रकार के धागे ९ हैं। उसके प्रकार बारह प्रकार के धागे मिलकर पूरे १०८ धागों का जाल बना। १०८ धागों का जाल छोटा ही है फिर भी, धागे

ज्यादा न रहने पर भी उससे मनुष्य को बाँधना बहुत ही आसान हैं। माया का जाल साधारण मछली की जाल जैसी नहीं हैं। जाल में का हर एक धागा अपने अंदर एक प्रभाव को रखता हैं। उस गुण प्रभाव वाली जाल में का हर धागा ऐसा प्रभाव रखती हैं कि जिससे मनुष्य को अपने तरफ खींच सके। इसलिए मनुष्य हर पल किसी न किसी गुण को चिपक जा रहा हैं। हर गुण जाल में एक धागे की तरह रहके, अपने अंदर आकर्षण रखने की वजह से उस गुण के आकर्षण प्रभाव में गिर जा रहा हैं। तेलुगु ज़बान में ***जाल*** को ***वला*** कहते हैं। और आकर्षण को ही तेलुगु भाषा में ***वलपु*** कहते हैं (तेलुगु ज़बान के शब्द आध्यात्मिक से बहुत ही खरीब रिश्ता रखते हैं इसलिये शब्दों का अर्थ इस ज़बान में समझाया जा रहा हैं।)। **वलपु शब्द से वला शब्द पैदा हुआ हैं।** इसलिए आकर्षण प्रभाव रखनेवाली गुणों को जाल से वर्णन करके बता रहे हैं। यह कहसकते हैं कि ऐसा कोई शक्स दुनिया में है ही नहीं जो माया के गुणों के जाल में न फसा हो। यानि कहसकते हैं कि ऐसा कोई शक्स है ही नहीं जो माया के प्रभाव में नहीं गिरा हो। जिसतरह मछलियाँ किसी न किसी आकर्षण के कारण जाल में फस जाते हैं, उसी तरह माया के जाल में भी मनुष्य फस जारहा है। मछलियों के जाल में जो धागे होते हैं वे एक ही प्रकार के होते हैं तो, हमने बयान करलिया ना कि! माया के जाल में १०८ प्रकार के धागे होते हैं! १०८ धागे बारह गुण भागों से जुडे हुए हैं। उनके एक एक के नाम बयान करलिए तो इसतरह से हैं कि १) काम २) क्रोध ३) लोभ ४) मोह ५) मद ६) मत्सर ७) दान ८) दया ९) औदार्य १०) वैराग्य ११) विनय १२) प्रेम। ये बारह गुण भागो में से मोह गुण जो गुण के लैन में चौथी वाली हैं वह ऐसी गुण हैं कि मनुष्य को अपनी अशाश्वित शरीर को दिखाकर यह अहसास दिलाती है या भ्रम में डालती है कि शरीर ही तू हैं, तू ही शरीर हैं

और शरीर के अशाश्वित माता पिता को दिखाके इस भाव में लेकर आती हैं कि यहीं तेरे असली माता पिता है, और अपने शरीर के प्रकार ऐसा भ्रम में डालती हैं कि मैं खूबसूरतवाला हूँ, या बद्सूरत हूँ, काला हूँ या गोरा हूँ, लम्बा हूँ या गिड्डा हूँ । इतना ही नहीं शरीर के माता पिता को भी उस शरीर के जीव के माता पिता की तरह भ्रम में रखने वाली भी मोह गुण ही हैं।

शरीर के माता पिताओं से पैदाहुए शरीर को माता पिताओं के शरीर की छवी या समानता आई हुई हैं। यह सहज ही हैं कि बाहर के माता पिताओं की शरीर की समानता या छवि उनके बच्चों को आना। पैदाहुए बच्चों को थोडा माँ की छवि, थोडी बाप की छवि रहना सहज ही हैं। कुछ लोगों में पिता के समानता ज्यादा रहकर, माता की छवि कम रहती हैं। तो कुछ लोगों में माँ की छवि ज्यादा रहकर, पिता की छवि कम रहती हैं। कुछलोगों में माता पिताओं में से सिर्फ एक की ही छवि रहती हैं ऐसा बहुत ही कम लोगों में होता है। मनुष्य यह छवियों के विषय में पूरे तरीके से मोह गुण में फसजा रहा हैं। अपने शरीर पर जो माँ बाप की छवि है उस छवि को देखकर वह (मनुष्य ऐसा) समझले रहा हैं कि मैं इन्हीका बेटा हूँ। वह इनसान जो खुद को अपना शरीर समझ बैठा, अपने शरीर पर जिस माँ बाप की छवि हैं उन्ही को अपना माता पिता समझले रहा है। मेरा, मेरे अपनेवाले कह कर मोह गुण इनसान को भ्रम में रखती हैं। मोह गुण के प्रभाव से छोटे उमर से माता पिता को अपनेवालों की तरह पहचाना हुआ मनुष्य, बडे होने के बाद अपनी शरीर की छवि माँ बाप के छवि से जुडे हुये रहने को देख कर, इसतरह का बंधन बडालेता है कि मैं सच में इन्ही का बेटा हूँ, यही मेरे माँ बाप हैं। माँ बाप पर बेटे को बेटे पर माँ बाप को अनुराग, आप्यायता (प्रेम)

बढजाता हैं। अगर इनसान अपने अंदर ऐसा समझता हैं तो इसका मतलब यह है कि मनुष्य मोह गुण के जाल में फसगया है। यही विषय को एक कवि ने अपने गाने में अनुराग, आप्यायता को खूबसूरत जालें कहा हैं। ऐसा लग रहा है कि उन बातों को वह कवि ने थोडी ज्ञान की दृष्टी से ही कहा हैं। बारह गुणों में एक मोह गुण ही बहुत कम उमर में ही प्ररंभ होकर माता को अपना समझकर (पहचान) कर बाद में बाप की पहचान करवाकर, उसके बाद कुटुंब में के सब सदस्यों को अपने वाले की तरह ही हिसाब करवा रही हैं।

सबलोग मोह गुण से भी पहली गुण आशा, दूसरी गुण गुस्से को बडे महत्व समझतें हैं लेकिन, आध्यात्मिक से तो मनुष्य को अपने आप के बारे में मालूम हुये बगैर जो गुण रोक रही हैं वह मोह गुण ही हैं। **कर्मों को इनसान पर थोपने वालों में से काम (आशा), क्रोध (गुस्सा) पहले वाले होने पर भी, मनुष्य को आध्यात्मिक से धोका करने में पहली वाली मोह गुण ही हैं।** इसलिये ही भगवद्गीता में ईश्वर ने अर्जुन के साथ ऐसा किया कि उसके अंदर पहले मोहगुण को प्ररेपित किया ताकि वह गुण ही युद्ध करने केलिये उसे आढे आजाये, फिर वह मोह गुण में फसकर अपने शरीर से संबंध रखनेवाले सबको अपने वाले ही समझकर वह दुख उठाये, जब अर्जुन इस हालत में था कि खुद को वह भूल गया, फिर भगवान ने मनुष्य को ऐसी हालत में ही ज्ञान की ज़रुरत हैं समझकर अर्जुन को दैवज्ञान की बोधा की। इससे यह मालूम हो रहा हैं कि आध्यात्मिक केलिये जो आढे आ रही हैं वह मुख्य से मोह गुण ही हैं वह गुण ही असली शाश्वित माता पिता को भूल गये जैसा कर रही हैं और अशाश्वित माता पिता यानि वह माता पिता जो असल में अपने (जीव के) माता पिता है ही नहीं उन्हें असली माता पिता की तरह भ्रम दिलवा रही हैं

(हिसाब करवारही हैं)। इसतरह मोह गुण में चिपक कर अपने असली माता पिता यानि प्रकृती परमात्मा को नहीं पहचानने वाला ज़मीन पर पैदा होने पर भी कोई फायिदा नहीं हैं कह कर बडे लोगों ने कहा हैं। यही विषय को वेमना योगी ने भी अपने पद्य में समझाते हुये इसतरह कहा हैं।

तेलुगु ज़बान में :-

तल्लि तंडुल मीद दया लेनि
पुत्रुंडु पुट्टनेमि वाडु गिट्टनेमि
पुट्टलो चेदलु पुट्टदा गिट्टदा
विश्वदाभिराम विनुर वेमा!!!

हिंदी ज़बान में :-

जिस पुत्र को माता पिता पर दया नहीं है
वह पैदा हुये तो क्या? या मरगये तो क्या? चुंटियों के
घर में क्या दीमक पैदा नहीं होता! या मरता नहीं !!
विश्वदाभिराम विनुर वेमा!!!

इस पद्य को बहुत से लोगों ने बचपन में ही पढा फिर भी माया ने ऐसा किया कि उसमें जो असली भाव है वह किसी को समझमें ने आये, इतना ही नहीं माया ने लोगों को इसतरह के भ्रम में रख दी कि ऊपर के पद्य में वेमना योगी जी ने जिस माता पिता के बारे में कहा हैं वह शरीर के माता पिता ही हैं (लेकिन वेमना जी के भाव में उन्होने आध्यात्मिक माता पिता के बारे में पद्य में बयान फरमाया)। वेमना योगी जी ने इस पद्य को बोलने से पहले ही और एक पद्य में इसतरह बताया हैं।

तेलुगु ज़बान में :-

वेमना पद्यममर वेयि
विधंबुल अरचि जूडजाड
चोद्यमौ ज्ञानंबु कल्गु
विश्वदाभिराम विनुर वेमा!!!

हिंदी ज़बान में :-

वेमना के पद्य ऐसे जमाये गये होते हैं
जो हज़ार तरीकों से अर्थ देने के बावजूद भी
और भी आश्चर्य कर ज्ञान उसमें नज़र आता हैं
विश्वदाभिराम विनुर वेमा!!!

इस पद्य के भाव के प्रकार वेमना के पद्य को पढने वाले सबको एक एक जन को एक एक तरीके से हज़ार तरीकों से समझमें आता है फिर भी, उस पद्य को तफसील के साथ बयान करके देखें तो यह मालूम हो रहा हैं कि पद्य में आश्चर्य करनेवाली ज्ञान के सिवा कुछ और नहीं हैं कह कर खुद वेमना जी ने ही कहा हैं। इसके प्रकार यह मालूम हो रहा हैं कि माता पिता पर दया नहीं रखनेवाले पुत्र के पद्य में वेमना योगी ने आत्मसंबंध माता पिता के बारे में कहा हैं, लेकिन शरीर से संबंध रखनेवाले माता पिता के बारे में नहीं कहा हैं। अगर आत्म संबंध ज्ञान के प्रकार इस पद्य को मालूम करलिये तो यानि वेमना योगी सहाब ने इस पद्य में यह कहा है कि पैदा होने के बाद जो मनुष्य अपने असली, शाश्वित माता पिता प्रकृती परमात्मा के बारे में मालूम नहीं करता, जिसको प्रकृती परमात्मा पर ध्यान नहीं हैं, उनके ऊपर श्रद्धा, दया नहीं रखनेवाला बेटा पैदा होने पर भी कोई फायिदा नहीं हैं, ऐसा बेटा पैदा हो या नहीं हो दोनों एक

ही बात है। जिस तरह चुंटियों के घरमें दीमक पैदा होकर मरजाति हैं, उसीतरह उसका जन्म भी निरर्थक हैं। सिर्फ माया के कारण ही हमलोगों को यह बात समझ में नहीं आया।

जिन्हे ब्रह्मविद्या शास्त्र नहीं मालूम और सिर्फ भौतिकशास्त्र का ज्ञान रखते हैं, वे लोग जो अपने आप को बडे वैज्ञानिक समझते हुये विज्ञान वेदिकाओं को रखलिये, हम सब कुछ जानते हैं कह कर अपने आप को बडे होषियार (अखलमंद) समझनेवाले, उन्होने जो शास्त्र को पढा उसके प्रकार, हमारी इस बात की इनकार करसकते हैं कि प्रकृती परमात्मा हमारे लिये माता पिता हैं। और यह भी कह सकते हैं कि हमारी यह बात शास्त्रविरुद्ध हैं। सबके लिये ईश्वर ही असली पिता हैं इस बात को दिवानी बात समझ सकते हैं। वे इसतरह कहने की एक वजह (कारण) भी हैं। वह यह है कि! बच्चे को उनके शरीर के माता पिताओं के शरीर की समानता ही नहीं बल्कि, वंशपारंपर्य जीन्स भी बच्चे के शरीर में रहने की कारण, वे कहते हैं कि उस बच्चे को कई पीढियों का संबंध रहता हैं, उस बच्चे को शरीर संबंधित माता पिता के भौतिक संबंध के रुप रेखायें ही नहीं बल्कि, अभौतिक गुण और आचार व्यवहार भी रहते हैं, इससे एक बच्चा दिखने वाले माता पिताओं से इधर भौतिक से भी, उधर अभौतिक से भी संबंध रखता हैं यह बात हम शास्त्रबद्ध के साथ कह सकते हैं, लेकिन प्रकृती, परमात्मा माता पिता हैं कहना अशास्त्रीय हैं। इसतरह वे लोग(वैज्ञानिक और जो लोग ईश्वर को नहीं मानते वे लोग) कहने का मौका हैं। ऐसी सूरत में कुछ लोग इसतरह सवाल कर सकते हैं कि आप की बात सच कैसे होसकती हैं? उसकेलिये हमारा जवाब यह हैं कि!

ज़मीन पर जो छः शास्त्र हैं उनमें से भौतिक शास्त्र एक हैं। वह कोई भी शास्त्र क्यों न हो कभी भी उसका खंडन नहीं किया जासकता। हम भी यही कह रहे हैं कि शास्त्र की प्रत्येकता ही यह हैं कि खंडन न किये जानेवाली शासन की तरह रहना ही उसकी प्रत्येकता हैं। यानि शास्त्र वह शासन या हुक्म या आज्ञा है जिसकी कोई भी खंडन या इनकार नहीं कर सकता। षटशास्त्रों में बाकी पाँच शास्त्रों से भी बडी महत्व वाली ब्रह्मविद्याशास्त्र हैं। मेरी बहस ब्रह्मविद्याशास्त्र से संबंध रखती हैं। बाकी लोगों की बहस भौतिक शास्त्र से संबंध रखती हैं। शास्त्रबद्धवाली कोई भी बहस हो सच ही होती हैं। अब कुछ वैज्ञानिक भौतिक शास्त्र के प्रकार, कह रहे हैं कि अभौतिक से नज़र न आनेवाले गुण भी उनके अपने अपने वंश के अनुसार शिशु को आरहे हैं, इसी वजह से भौतिक और अभौतिक दोनों क़िसम से भी एक शिशु के असली माता पिता दिखनेवाले माँ बाप ही हैं कहना शास्त्रबद्ध ही हैं मैं भी इस बात से सहमत हूँ। तो यहाँ पर खूब गौर करनेवाली बात यह है कि! माता पिता से संक्रमण होनेवाली डि.एन.ए (जीन्स) भी भौतिक ही हैं,जीन्स का आकाप मरोडी हुयी सीढी जैसी हैं, माँ के अंड में के, बाप के वीर्य में के क्रोमोज़ोम्स के कारण वंश पारंपर्य वाली जीन्स (डि.एन.ए) तय्यार हो रही हैं, यह मालूम हो रहा है कि वंश पारंपर्य से आनेवाले गुणों के आचरण भी भौतिक ही हैं। अब अगर ब्रह्मविद्या शास्त्र के अनुसार देखें तो मनुष्य के जीन्स का या वंशपारंपर्य का ब्रह्मविद्या शास्त्र से कोई लेना देना नहीं है। बाप का वीर्यकण हो,माँ का रजोकण (अंड) हो, उनका ब्रह्मविद्या शास्त्र से कोई संबंध नहीं हैं। वे केवल भौतिक शास्त्र से संबंध रखते हैं। जहाँ तक भौतिक शास्त्र से संबंध हैं उसके हिसाब से यह बात सच ही हैं कि एक मनुष्य के लिये भौतिक माता

पिता होते हैं। और वंश पारंपर्य से संबंध रहना भी सच ही हैं। तो यहाँ पर गौर करनेवाली बात यह हैं कि!

शरीर में रहनेवाले जीव को कर्मा कहलानेवाली एक चीज़ हैं। एक जीव अपने कर्म के अनुसार ऐसे घरवालों में पैदा होता हैं जिनके कर्म उस जीव के कर्मों से बहुत ही खरीब (नज़दीक) संबंध रखते हो। जीव का कर्म ही इसतरह उसे एक वंश में पैदा कर रही हैं। प्रपंच में ऐसे लोग हैं जो कई क़िस्म के करम रखते हैं। उनके अपने करम (कर्मा) ही उन्हे दूसरे जन्म को लेके जा रहे हैं। जब इसतरह लेकेजाते हैं तो तखरीबन उसी तरह के कर्म रखनेवालों के घर में ही या वंश में ही पैदा कर रहे हैं। इसी वजह से पिछले अपने बडों ने उनके कर्म के प्रकार जो काम किये होंगें वही काम बाद में पैदाहुये लोग भी अपने कर्मों के प्रकार करने के कारण इन कामों को देखनेवाले लोग कहते हैं कि इसे अपने दादा की अखल ही आयी हैं,या पडदादा की अखल ही आयी हैं, या बाप की अखल आयी हैं। उन्हे यह बात नहीं मालूम कि कर्मों के अनुसार ही मनोबुद्धि, चित्त काम करते हैं इसीलिये काम करनेवाली बुद्धि को, दादा या पडदादा का हैं कहते हैं। इसतरह ऊपर से दिखनेवाले कामों को देखकर कहते हैं कि एक मनुष्य फलाना वंश का हैं, फलाना बाप का बेटा हैं। ये सब चीज़ें भौतिक माता पिताओं को दिखाते हुये इनसान को ऐसी गफलत में (अज्ञान में) रख रहे हैं कि मनुष्य को यह तक नहीं मालूम होने दे रहे हैं कि वह असल में कौन है? और उसकी असली स्थिति क्या हैं? एक मनुष्य को विभाजित करके देखें तो मालूम हो रहा हैं कि शरीर अलग हैं, जीव अलग हैं। ऐसा ही शरीर जीव,कर्म दो अलग अलग से हैं। जीव अपनी ज़िदगी या जीवित में कर्म को कमाले रहा हैं और कर्म की अनुभव कर रहा है या भुगत रहा हैं। जो कर्म

पिछले जन्म में कमाया था उसके प्रकार ही जीव को ज़िंदगी गुज़ारनी पडेगी। हर काम की वजह कर्म ही हैं तो, जो काम हो रहा हैं उसमें के सुख दुखों को जीव अनुभव करता रहता हैं। लेकिन जो काम हो रहे हैं उनके प्रकार हो,उस जीव के कर्म के प्रकार हो हमलोग ऐसा नहीं कह सकते हैं कि जीव फलाना लोगों के ताल्लूख से हैं। इतना ही नहीं जीव के क्या रुप रेखायें हैं? जीव कौनसे पदार्थ के साथ जुडा हुआ हैं? असल में जीव का मतलब क्या हैं? जीव कौन हैं? ये सारे बातें भी नहीं बता सकते हैं। जो कर्म चल रहा हैं उसके प्रकार, जो काम हो रहे हैं उनके प्रकार एक व्यक्ति के भौतिक माता पिताओं को, उसके वंश के बारे में बता सकते हैं। लेकिन उसमें रहनेवाले जीव के अंश के बारे में हो, आकार के बारे में हो बता नहीं सकते।

ज़मीन पर जो हैं वे षट शास्त्र (छः शास्त्र) ही हैं। उनमें से पाँच शास्त्र जनरल सैन्स के ताल्लुख से हैं। जनरल सैन्स मतलब सामान्य शास्त्र हैं। उसी तरह सूपर सैन्स एक हैं। सूपर सैन्स का मतलब ब्रह्मशास्त्र या बडा शास्त्र है कह सकते हैं। ब्रह्मा का मतलब सिर्फ **बडा** हैं। सैन्स को विज्ञान कहसकते हैं। छः शास्त्रों में पाँच शास्त्र यानि एक गणित शास्त्र, दो खगोल शास्त्र, तीन रसायन शास्त्र, चार भौतिक शास्त्र, पाँच ज्योतिश्य शास्त्र हैं। ये पाँच शास्त्रों से भी पहले पैदा जो हुयी वह ब्रह्मविद्या शास्त्र हैं या ब्रह्म शास्त्र हैं कहसकते हैं। चाहे वह कोई भी प्रपंच का विषय क्यों न हो उसकी शास्त्र प्रमाण ज़रूर होना चाहिये। जिसका शास्त्र प्रमाण नहीं होता हैं उसे झूट या असत्य खरार करदिया जायेगा। इसलिये एक विषय को सत्य कहने के लिये शास्त्र की जितनी ज़रुरत है, ऐसा ही एक विषय को असत्य कहने के लिये भी शास्त्र की उतनी ही ज़रुरत होती हैं यह सूत्र या फार्मुला के प्रकार शास्त्र के द्वारा इस बात का फैसला

कर सकते हैं कि कौनसा सत्य हैं और कौनसा असत्य। जो बात शास्त्र के प्रकार नहीं कहीं गयी वह सत्य भी होसकता हैं या असत्य भी हो सकता हैं। ऐसा कहना मूर्खत्व से कहे जैसा होता हैं। इसलिये यह कह सकते हैं कि अगर एक विषय सच है या झूट है देखनेकेलिये शास्त्र आँख की तरह काम आति है।

हम ने यह बात पहले ही बयान करलिये हैं ना कि प्रपंच में के छः शास्त्रों में से पाँच सामान्य शास्त्र हैं तो एक असामान्यवाली बडी शास्त्र हैं! बडी शास्त्र भगवद्गीता में भी कहना हुआ कि एक जन्म में के संस्कार से दूसरे जन्म के भौतिक माता पिता रहेंगें या मिलेंगें। वे लोग जिसतरह के आदतें, सोंच, आचार रखते हैं बिलकुल उसीतरह के आदतें, सोंच, आचार रखने वालों के घरों में पैदा होते हैं कह कर गीता में कृष्ण भगवान ने भी कहा। भगवद्गीता आत्मसंयम योग 41, 42 श्लोक

श्लो ४१. प्राप्यपुण्य कृताम लोकानुषित्वा शाश्वती स्समाः।
शुचीनाम श्रीमताम गेहे योग भ्रष्टोभि जायते ।।

श्लो ४२. अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम ।
एतद्धि दुर्लभतरम् लोके जन्म यधीदृशम ।।

भाव :- जो लोग पिछले जन्म में योग भ्रष्ट हुये वे लोग उनके पुण्य फल को भुगतने के बाद अच्छे आचार रखनेवाले श्रीमतों (ज्ञानियों) के गृहों में पैदा होते रहते हैं। वरना दैवज्ञान में अच्छे अखलमंदों के यानि योगियों के वंश में हो पैदा होते रहते हैं। लोक में ऐसा जनम पाना बहुत ही दुर्लभ हैं।

इससे यह मालूम हो रहा हैं कि ज्ञानी लोग ज्ञानियों के पास, योगी लोग योगियों के पास उनके वंशों में पैदा होते हैं। क्योंकि यह

बात ब्रह्मविद्या शास्त्र यानि भगवद्गीता में कहने की वजह से पूरा सच ही हैं। इतना ही नहीं यह भी मालूम हो रहा हैं कि वह प्रत्यक्ष से हो रहा हैं।

जिस तरह की आचार व्यवहारों पर एक मनुष्य की श्रद्धा रहती हैं, उसीतरह के भाव रखनेवालों के घरों में वह पैदा होने से, बाप दादा के भाव रहने से, यह कहने के लिये सपोर्ट मिल रहा हैं कि वह व्यक्ति फलाना जन का पोता या नवासा हैं, फलाना जन का बेटा हैं। इसतरह के कुछ मज़बूत बाहर से दिखनेवाले आधार से एक मनुष्य ऐसा समझले रहा हैं कि मैं फलाना लोगों को पैदा हुआ हूँ। इसलिये हर मनुष्य बाहर से प्रत्यक्ष से दिखनेवाले माता पिता को ही अपने माता पिता कह कर बोललेरहा हैं। तो हक़ीकत में किसीको यह बात मालूम नहीं हो रहा हैं कि ये सब कुछ भौतिक हैं बाहर के व्यवहारों से संबंध रखनेवाली बात हैं, आचार व्यवहार गुणों की श्रद्धा के प्रकार आरहे हैं,गुण उनके आचार अलग होते हैं, ऐसा ही जीव अलग है, आत्मा से संबंध रखनेवाला जीव हैं, जीव गुणों से संबंध रखनेवाला नहीं हैं। इसलिये मनुष्य समझरहा हैं कि शरीर से संबंध रखनेवाले माता पिता ही अपने असली माता पिता हैं। एक शरीर के छवि के कारण दो आचार आदतों के कारण, इन दो कारणों की वजह से हर मनुष्य अपने माता पिता के विषय में गलतफहम में रह कर अपने शरीर के माता पिताओं को अपने खुद के माता पिता समझले रहा हैं। लेकिन ऐसा कोई नहीं समझ रहा हैं कि खुद को दो प्रकार के माता पिता हैं, एक अपने (जीवात्मा) के ताल्लुख से, दूसरे अपने शरीर के ताल्लुख से, जो माता पिता खुद (जीव) के ताल्लुख से हैं वे सृष्टी आदि से यानि जब से यह प्रपंच बना तब से लेकर अब तक एक ही माता पिता हैं और वे ही शाश्वित माता पिता हैं, अपने शरीर से ताल्लुख रखनेवाले माता पिता हर जनम जनम में अलग अलग होते हैं।

सर्वसाधारण मनुष्यों को, सिर्फ दिखनेवाले माता पिताओं के बारे में ही मालूम होकर, शायद नज़र न आनेवाले माता पिताओं के बारें में उनको नहीं मालूम। यह भी कहसकते हैं कि उन्हे यह बात तक नहीं पता कि माँ बाप दो क़िस्म से हैं। तो दैवज्ञान रखनेवाले ज्ञानियों को और योगियों को यह बात मालूम होकर रहता हैं कि दूसरे क़िस्म वाले माता पिता यानि प्रकृती परमात्मा ही असली माता पिता हैं। जिन लोगों को ज्ञान मालूम हैं उनको हर जनम जनम के शाश्वित माता पिता के बारे में पता होने से, अपने शरीर के माता पिता को ज्ञानियाँ स्वल्प समझते हैं और ये लोग तो सिर्फ एक ही जनम केलिये माता पिता हैं और ये लिमिटेड समझते हैं। तो क्या ज्ञान जाना हुआ व्यक्ति अपने शरीर के माता पिता की इज्ज़त करता हैं? क्या बुढापे में उनकी देखभाल (परवरिश) करता हैं? इसतरह के सवाल पैदा होते हैं। इसकेलिये हमारा जवाब यह हैं कि! शरीर के माता पिता जब से उसका शरीर पैदा हुआ तब से उसका देखभाल कर रहे हैं। यह बात तो सब जानते ही हैं कि उनको जो बेटा पैदा होता हैं उसे मेरा बेटा कहनेवाली मोह गुण से पाल पोसते हैं। ज्ञान जाना हुआ व्यक्ति अपने शरीर के माता पिता को, अपने शरीर की पोषणा किये हुये अत्यंत सन्निहित लोगों की तरह समझकर, उसके बदले में उनके शरीर को भी देखभाल करना उसका मुख्य कर्तव्य समझना चाहिये। उसके बचपन में जितनी जिम्मेदारि के साथ उसे विद्याबुद्धी सिखाये थे, जितनी प्यार के साथ उसे पाला था या बडा किया था, भूका न रखते हुये सही वक्त पर टैम टू टैम जिसतरह आहार का इंतेज़ाम किया था, ऐसा ही हर तरह से माता पिताओं को ज़िम्मेदारि से देखलेना चाहिये कह कर एक ज्ञान जाना हुआ व्यक्ति समझता हैं। जो व्यक्ति ज्ञानी या योगी होता हैं वह यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि अपने माता पिता प्रकृती परमात्मा हैं और वे कभी

बूढे नहीं होते, वह खुद कभी भी बडा नहीं हो सकता, वह हमेशा केलिये माता प्रकृती के गोद में छोटा बच्चा ही हैं, इसलिये बाप परमात्मा, माँ प्रकृती ही हमेशा उसकी देखभाल करनेवाले हैं, वह उनकी देखभाल करने की हालत में कभी नहीं जासकता।

सिर्फ शरीर के माता पिता बूढे होते हैं तो, उसे उमर आनेसे उनकी देखभाल करने की खाबीलियत रखता हैं। इसलिये अपने माता पिता को छोडकर, अपने शरीर के माता पिताओं की पोषणा करना ही इस जनम का काम हैं, यही न्यायवाला काम है कह कर एक ज्ञानि पहचान कर, ऐसा समझता हैं कि अपने शरीर के माता पिताओं को किसी भी तरह का असौकर्य हो या तकलीफ हुये बगैर देखलेना चाहिये। ज्ञान जाना हुआ व्यक्ति यह बात अच्छी तरह जानता हैं कि प्रकृती परमात्मा ही अपने माता पिता हैं फिर भी वह अपने शरीर के माता पिताओं को अश्रद्धा नहीं करता। क्यों कि उन्होने बचपन में उसकी देखभाल की हैं उसीतरह बुढापे में भी उनके शरीरों की पोषणा करना अपनी ज़िम्मेदारि समझता हैं। योगी या ज्ञानि अपने माता पिता पर कितना भी भक्ति रहने पर भी, अपने शरीर के माता पिताओं के ओर गैरज़िम्मेदारी से पेश नहीं आता। अपने शरीर की पोषणा करने के बदले में, उनके शरीर के पोषणा देखना भी अपना मुख्य काम समझता हैं। प्रपंच में ज्ञान न जानने वाले साधारण व्यक्तियाँ उनके माता पिताओं की देखभाल न करते हुये आखरी दशा में उनके जायेदाद को माल को खींचलेते हैं। बूढे हुये माता पिता अगर मरगये तो जो भी जायदाद हैं उसे अपनी पसंद के मुताबिक इस्तेमाल कर सकते हैं समझकर उन्हे मारडालने वाले भी हैं। ऐसे लोग भी हैं जो उनकी जायदाद को इस्तेमाल करलेते हुये माता पिताओं को बेघर करदिये। इसतरह कुछ लोग जो ज्ञान नहीं

रखते वे अपने माता पिताओं को कई प्रकार से तकलीफ देनेवाले भी हैं। लेकिन जो लोग ज्ञानी, योगि होते हैं वे दिखनेवाले माता पिताओं को अपने शरीर के माता पिता जानकर, उनको ठीक तरीके से इज्ज़त देते हुये, उनको किसी भी तरह का असौकर्य न होने देते हुये, किसी भी तरह का तकलीफ न होने देते हुये ज़िम्मेदारी के साथ देखलेते हैं।

वहाँ वहाँ कुछ बेटे ऐसे नज़र आते हैं जो शरीर के माता पिताओं को ठीक से देखभाल नहीं करते, और कुछ बेटे ऐसे नज़र आते हैं जो बिलकुल भी देखभाल नहीं करते। ऐसे बेटों को देखकर माता पिता दुखित होते रहते हैं। ऐसे माता पितायें भी हैं जो पोषणा की विषय में बेटे ज़रा भी खयाल न करने के बावजूद भी, बेटों के बारे में तकलीफ हुये बगैर यह सब हमारा कर्म है कहते हुये अपने आप को संभालते हैं। बेटें परवरिश न करने पर भी, जायदाद कुछ भी कमाकर नहीं दिये कह कर गालियाँ दे रहें तो भी, बडे बडे विद्यायें पढे हुये बेटे अपने माता पिता को अखल कमवाले कह कर समझने पर भी, हर बात पर हसीं मज़ाक उडाते हुये बेइज्ज़ती से बात करने पर भी, माता पिता थोडे तद तक दुखित होते हैं। तो सबसे ज्यादा तकलीफ पहुँचानेवाली बात एक हैं। बिना किसी तकलीफ के माता पिताओं को पालनेवाले बेटे भी, सिर्फ एक विषय में गलती से बात किये तो, वह बात उनके माता पिता को सबसे ज्यादा तकलीफ देती हैं। ऐसी यदार्थ हालत को नीचे बयान करते हैं देखिये।

एक मिडिल क्लास कुटुंब (फामिलि) वाले को सिर्फ एक ही एक बेटा संतान है। सिर्फ एक बेटा ही होने से उस बेटे पर मोह गुण, प्रेम गुण दोनों मिक्स करके बडा प्यार के साथ पाललिया करते थे। हमारा बेटा ही हमारी ज़िदगी हैं इसतरह की गहरी भाव के साथ

अपने बेटे को पालते हुये, जो सहूलतें उनको नहीं हैं वे भी अपने बेटे को देते रहें। स्वादिष्ट पदार्थ को बेटे को पकाकर, वे बिना स्वादवाला आहार खाते थे। पैसों की खाबीलियत न रहने पर भी कर्ज़ करके बेटे को अच्छे कपडों का इंतेज़ाम करते थे। इसतरह बेटे को छोटे उमर से सुख से पालते हुये उन्होने बहुत कष्ट उठाये। बडी पढायि पढाने की ताकत उनको न रहने पर भी महनत करके अपने बेटे को उन्नत पढायियाँ पढाते थे। इस बात से वे खुश होते हुये अपनी कष्ट को भूलजाते थे कि अपना बेटा बडी पढायि कर रहा हैं। ऐसी समय में बेटा शहर (नगर) में निवास करते हुये, इस बात का ज़रा भी खयाल न करते हुये कि मेरेलिये मेरे माता पिता कितना परेशान उठा रहे हैं, जैसी अपनी मरज़ी हैं वैसे चल रहा था। उसके माता पिता बहुत ही महनत करके जो पैसा उसकेलिये भेजते थे उसे बेकार खर्च करता था। इतना ही नहीं अपने साथ पढने वाली एक मालदार फामिलि की लडकी को प्यार किया जो उसी की तरह खुशी से पैसा खर्च करती हैं। वह लडकी भी उससे प्यार की लेकिन यह समझकर प्यार किया कि वह भी मालदार ही हैं। ऐसा एक दूसरे से प्यार करलेने के बाद उनकी पढायी भी खत्म होगयी। पढायी खतम होने के बाद उसे बडी नौकरी आना भी हुआ। नौकरी आने के बाद जिस लडकी को उसने प्यार किया था उससे शादि करना चाहा था। शादि के बारे में बात करने के लिये जैसे लडकी ने कहा उसके प्रकार एक दिन उनके घर गया। उस लडकी ने उसे अपने माता पिताओं से मुलाकात करवाया। उस लडकी के घर गया हुआ वह व्यक्ति बहुत ही खीमती वाले उस घर को, उन्नत दर्जे वाले उस लडकी के माता पिताओं को देखकर, ऐसा समझा कि अगर ये लोग अपनी छोटी झोपडी को, अपने माता पिता को देखेंगे तो उसने जिस लडकी से प्यार किया वह लडकी कभी भी उससे शादि नहीं करेगी, इसीलिये

उन लोगों को अपने घर जाने से रोकने के लिये उसने उनलोगों से ऐसा कहा कि फिलहाल मेरे माता पिता विदेश गये हुये हैं, जब वे वापिस आयेंगें तब उनसे ज़रुर मुलाखात करवाऊँगा। जब लडकी के माता पिता उस व्यक्ति से ऐसा कहा कि हमारी एक लौती बेटी हैं, कोई और दूसरा संतान नहीं हैं, इसीलिये जो जायदाद हैं वह सब उसीका हैं, अगर उसे शादि करलिये तो अपने कुटुंब में ही तुम्हे घर जमाई की तरह रहना पडेगा। जब उस व्यक्ति ने, क्योंकि उसके पास कोई जायदाद (पैसा) नहीं थी इससे बढकर भाग्य क्या होसकता हैं समझकर, अगर ऐसा मौका छोडलिये तो फिर से नहीं मिलेगा समझकर, उनके घरमें ही रहने केलिये राज़ी हो गया।

इसतरह राज़ीहोने से या खुबूल करने से उनकी शादि तै (निश्चय) होगयी। उसने अपने माता पिता को यह बात नहीं बतायी कि उसकी शादि तै हुयी हैं। उसने इसलिये वह बात अपने माता पिता को नहीं बतायि कि अगर बतादिये तो वे लोग उसकी शादि में आयेंगें,उनके सूखे हुये चेहरों को, पतले से शरीरों को अगर उसके मामा ने देखलिया तो यह बात साफ पता चल जायेगा कि उसने जबतक खुद के बारे में जो भी बातें कहीं थी यानि वह पैसेवाला हैं बडा मालदार है ये सब बातें झूठ साबित होंजायेंगे, इस के कारण शादि रुकजासकती हैं (इसलिये नहीं बताया)। इतना ही नहीं शादि के दिन अपने माता पिताओं की तरह अपने मामाजान से परिचय करवाने केलिये, अच्छे खासे मोटे ताज़े दिखनेवाले बडी उमर के एक जोडे का इंतेजाम करलिया। पहले ही उनसे ऐसा कह कर इंतेज़ाम किया कि तुम लोग मेरे माता पिता की तरह नाटक करो। अपने माता पिता की जगह जिस माता पिता को उसने इंतेज़ाम किया उनको लाकर शादि से पहले दिन ही अपने मामा को दिखाना हुआ। आखिर शादि होने का

समय आ ही गया। हखीकत में उसके माता पिता को उनके बेटे की शादि के बारे में नहीं मालूम। तो उन्होने अपने बेटे को देखना चाहा इसलिये शुरु होकर शहर आगये। ठीख उसी दिन उनके बेटे की शादि होनेवाली है कहकर उन माता पिता को नहीं मालूम था। शहर आने के बाद उन्हे यह मालूम हुआ कि अपने बेटे की शादि हैं, वह शादि का मुहूरत और एक घंटा हैं, और विवाह फलाना कल्यान मंडप में हो रहा हैं। यह बात मालूम होते ही वे लोग फौरन कल्यान मंडप के पास दौडकर आगये। जिस समय वे आ रहे थे उस वक्त अपने बेटे को मंडप में बैठे हुये देखकर, क्यों कि उस वक्त और कुछ बातनहीं कर सकते इसलिये वहाँ के लोगों में ठहरके बेटे के शादि को देखते रह गये। उनके आने के बाद दस मिनटो में शादि होगयी। शादि होजाने के बाद पुरोहित ने कहा कि दुलहा, दुलहन अपने अपने माता पिताओं के पैरों को नमस्कार करलेना चाहिये तो दुल्हे ने पहले ही इंतेज़ाम करके रखे हुये माता पिता को पाद नमस्कार करके फिर दुलहन के माता पिताओं को पाद नमस्कार किया। इस संघटन को प्रत्यक्ष से देखे हुये दुल्हे के असली माता पिताओं को, वहाँ जो कुछ हो रहा हैं वह सब मालूम होगया। उन्होने समझलिया कि जिस बेटे को जान से भी ज्यादा प्यारा समझकर पाला था उसीने उन्हे बडा धोका किया।

फिर असली माता पिता ने सोचा कि आखिर क्यों उसने उनके साथ इतना बडा धोका किया यह बात उसी से पूछते हैं समझकर लोगों में से आगे बढकर अपने बेटे को मिले। जब उनका बेटा बिलकुल न घबराते हुये सर्व साधारण से, जैसे बाहर वालों से बात करते हैं वैसे पूछा कि कैसे हे आप! सब ठीक है क्या! फिर फौरन वहीं पर उसके सास, ससुर को अपने माता पिता को

दिखाकर कहा कि ये लोग अपने जंगल में काम करनेवाले नौकर हैं कह कर परिचय करवाया। जब उसके माता पिता यह बात सुन कर आश्चर्य होकर, यह समझ करलिये कि अपना बेटा हमारे बारे में झूठ कह रहा हैं। और यह भी समझ लिये कि उनके जगह दूसरे माता पिताओं को इंतेज़ाम करलिया, इसलिये इस वक्त अगर कुछ भी बात करें तो यह बात सबको मालूम होजायेगा कि अपना बेटा धोकेबाज़ हैं, अगर अब यह बतायें कि हम ही उसके असली माता पिता हैं तो उससे अपने बेटे को ही ज्यादा तकलीफ पहुँचेगी, इसतरह अपना बेटा अपने माँ बाप से ही परेशानियों में फसना उनको पसंद नहीं था इसलिये वे कुछ भी बात न करते हुये चुपचाप रह गये। वह अपने सुख के खातिर, अपनी मन पसंद लडकी को शादि करलेने केलिये, अपने माता पिताओं को छोडकर, दूसरे लोगों को खुद के माता पिताओं की तरह दिखाना हुआ। अपना बेटा असली माता पिता को छोडकर, अपनी इज्जत केलिये किरायी केलिये कुछ वक्त रहकर चलेजाने वालों को अपने माता पिताओं की तरह दिखाना ही नहीं बल्कि, शादि के वक्त उन माता पिताओं के नामों को बताया जो शाश्वित नहीं हैं यह सब कुछ गौर किये हुये माता पिता, हम को पैदा होकर हमारा नाम बताये बगैर दूसरों के नामों को बताना बहुत ही दुख की बात होने पर भी, अपना बेटा कितना भी बडा धोकेबाज़ क्यों न हो बेटा तो अपना ही है ना समझकर सबर किये थे।

देखा आप लोगों ने! कितना दुखदायक बात हैं ना!!! चाहे वह कोई भी माता पिता क्यों न हो अगर उनका अपना बेटा ही उन्हे अपना नहीं मानते हुये, दूसरों को माता पिता कहना देखें तो, वे बहुत ही बुरी तरह से दुखित होते हैं। किसी भी माता पिता को हो यह बात मानसिक बाधा (सद्मा) पहुंचाता हैं। लेकिन यहाँ पे जो संघटना हुआ

इसमें दुल्हे के असली माता पिता दुखित नहीं हुये। उन्होने ऐसा समझा कि चाहे वह कहीं भी रहें, किसी को भी अपने माता पिता कहें, आखिर वह हमारा ही तो बेटा हैं ना! अपना बेटा सुख या खुशी के साथ रहा तो हमारे लिये वही काफी हैं। अपना बेटा अपने आँखों के सामने उनको नौकरों की तरह बनाकर, वह तात्कालिक माता पिताओं को अपने माता पिता की तरह बोललिया है जो असल में उसके माता पिता ही नहीं हैं फिर भी यह सब बरदाश्त करके, ऐसा समझलिये कि चाहे वह कैसे भी कहें हम ही उसके असली माता पिता हैं ना! फिलहाल उसे यह बात नहीं मालूम कि वह गलती कर रहा हैं इसलिये वह दूसरों को अपने माता पिता कह रहा हैं, फिर भी एक न एक दिन हमें ही अपने माता पिता की तरह ज़रुर खुबूल करेगा। इसतरह छे महीने बीत गये। इतने में एक दिन गाँव में रहने वाले माता पिताओं को यह बात मालूम हुआ कि अपने बेटे को बडी बिमारी आयी हैं। अपना बेटा बीमारी से तकलीफ उठा रहा हैं कह कर मालूम होते ही फौरन, वो बूढे जोडी शहर शुरु हुये। उनके जाने से पहले ही डाक्टरों ने कहा कि हास्पिटल में शामिल हुआ व्यक्ति को खून कम हैं, उसके गूंप के लायक का खून चाहिये। जब उसके मामा ने उन माता पिता को बुलवाया जो शादि के वक्त तक तात्कालिक माता पिता की तरह नाटक किया था। उनके खून को टेस्ट किये तो मालूम हुआ कि उस व्यक्ति के गूंप के लायक का खून नहीं हैं। ऐसा होने के बाद उसके असली माता पिता हास्पिटल को आना हुआ। जिन्हे अपना जमाई नौकर कहा उनको देखकर उसके मामा को शक हुआ। पहले माता पिता की तरह आये हुये लोगों में उसकी छवि या समानता न रहना, उनका खून का गूंप अलग रहने से यह शक पैदा हुआ कि वे लोग शायद उसके असली माता पिता नहीं हैं। ऐसा ही जिनलोगों को उसने अपने नौकर कहा उनमें उसके दामाद के

छवि या समानता ज्यादा रहना देखकर होसकता हैं यही इसके असली माता पिता हो। फौरन उसके मामा ने वहाँ आये हुये जोडे के खून को, डि.एन.ए को (जीन्स की) परीक्षा करने से मालूम होगया कि उसका ब्लडर्गूप बराबर होना ही नहीं बल्कि, उस जोडे की डि.एन.ए (जीन्स) अपने दामाद का डि.एन.ए भी एक ही हैं। इस टेस्ट से यह बात मालूम होगया कि वह उस जोडे का बेटा ही है, वही उसके असली माता पिता हैं। आखिर में सब को यह बात मालूम होगया हैं कि हम ही असली माता पिता हैं और शादि में जो लोग दिखे थे वे तात्कालिक माता पिता थे और अपना बेटा भी उनको अपनी माता पिता की तरह खुबूल करने से वे जोडी खुश हुये। जब उसके बेटे को अपने (खुद या खास) घरको लेके गये।

इतना वक्त अपने असली माता पिता को छोडकर रहने के लिये बेटे ने माता पिताओं से माफि माँगि। अपनी गलती को मालूम करलेने से, वापिस असली बाप के घरको पहुँच पाया हैं। यह पूरे संघटन में कोई भी इनसान हो ऐसा ही कहेगा कि इसमें सिर्फ बेटे की ही गलती हैं, माता पिता ने बहुत ही सबर से काम लिया, ऐसा वाला बेटा किसी भी माता पिता को नहीं रहना चाहिये। यह सब कुछ पढे हुये आप भी ज़रूर यही कहेंगें कि बेटे का विलन रोल है तो, बाप का रोल हीरो का है। तो ऐसा कोई नहीं समझता कि खुद का हि विलन रोल है। यह बात को तफसील के साथ बयान करलिये तो ऐसा हैं कि हर मनुष्य को शाश्वित, अशाश्वित दो खिसम के माता पितायें होते हैं। अब जो भी मिसाल बताया गया है उसमें शादि के समय दुल्हे के लिये थोडी देर तक जिन्होने माता पिता की तरह नाटक किये थे। वे अशाश्वित (टेम्पररी) माता पितायें हैं। जैसे उसे बचपन से पाले हुये शाश्वित माता पिता हैं, वैसा ही हर मनुष्य के लिये जब से प्रपंच

पैदाहुआ तब से लेकर जीवात्मा को पाल रहे प्रकृती परमात्मा ही शाश्वित माता पिता हैं, जो लोग सिर्फ एक जनम के लिये ही माता पिता हैं वे शरीर के माता पिता अशाश्वित माता पिता हैं। जीव अपने शाश्वित माता पिता को दुल्हे के जैसा छोड देकर, सिर्फ शादि के वक्त काम आने वालों को पकडे जैसा, सिर्फ एक जनम में काम आनेवाले अशाश्वित माता पिता के बारे में बोलले रहा हैं। जैसे उसने किया वैसे हम भी शाश्वित जननी जनक यानि प्रकृती परमात्मा को छोडकर, उनको पकड रख्खे हैं जो असल में माता पिता ही नहीं हैं। हम प्रकृती परमात्मा को माता पिता की तरह नहीं समझ रहे हैं फिर भी, वो (प्रकृती परमात्मा) तो बहुत ही सबर के साथ ऐसा समझ रहें हैं कि हम कहीं पर भी हो किसी को भी आश्रय करलें, आखिर वह मनुष्य हमारा बेटा ही तो हैं ना! शादि में अपना बेटा, अपने सामने ही दूसरे माता पिता को पाद नमस्कार करते समय भी, अपने बेटे की क्षेम (भलाई) चाहने वाले माता पिता की तरह, प्रकृती परमात्मा जीव पर ज़रा भी आग्रह (गुस्सा) नहीं दिखाये। जिसतरह उनका बेटा अपनी गलती को जान कर आखिर में अपने खास घर को गया हैं, उसीतरह जीव भी उसने अपने अज्ञान से जो बरताव किया वह गलत है समझ कर, ज्ञान जानकर अपने असली माता पिता प्रकृती परमात्मा की सन्निधान (मोक्ष) पायेगा। मैं समझता हूँ कि यह विषय हम सब जीवों के लिये एक रियलैज़ेशन की तरह रहें।

हमने बहुतबार बहुतसे लोगों को यह बात बताया कि हर मनुष्य माता पिताओं के माम्ले में भूल नहीं करनी चाहिये, शरीर के माता पिता को शरीर के इज्ज़त से, आत्मा संबंधित माता पिताओं को आत्मा इज्ज़त के साथ ही देखना चाहिये। बहुत से लोग सिवाये शरीर के माता पिता के, अपने (जीवात्मा के) माता पिताओं के बारे में ज़रा

भी खयाल नहीं कर रहें हैं या बिलकुल पहचान ही नहीं रहे हैं, ऐसा करने से खुद को प्रकृती परमात्मा से जो मिलना है वह नहीं मिलेगा। हमने जो कहा वह बात सुन कर कुछ लोग इसतरह का सवाल भी किये कि आप वह विषय को बता रहे हैं जो अब तक किसी ने नहीं कहा हैं। जहाँ तक हम जानते हैं हमारे दिखने वाले माता पिता के अलावा कोई और नहीं हैं। यह बात हम बहुत अच्छी तरह से जानना ही नहीं बल्कि, कई स्वामीजियाँ और ज्ञान जाने हुये बडे लोग दिखने वाले माता पिता की ही इज्जत देनेकेलिये कहा हैं, पूजा करने केलिये कहा हैं। जैसे बडों ने कहा वैसे कुछ लोग कर रहे हैं, कुछ लोग नहीं कर रहे हैं। लेकिन सिर्फ आप ही अब यह कह रहे हैं कि दूसरे माता पिता भी हैं, वे इनसे भी बडे हैं, अगर उनको नहीं पहचाने तो उनकी जायदाद (संपत्ति) तुम्हे हासिल नहीं होगी कह रहे हैं। हम यह नहीं जानते कि वे कौन हैं और उनका जायदाद क्या हैं। जैसे सबको मालूम हैं वैसे हमारे माता पिता को ही हम जानते हैं। उन्होने मुझे जो दस एकड़ की ज़मीन बाँट कर दी हैं वह भी मालूम हैं। तो नज़र न आनेवाले माता पिताओं के बारे में हो, उनसे हमें मिलनेवाली जायदाद के बारे में हो हम नहीं जानते। अगर आप जानते हैं तो वो कैसे रहते हैं, उनकी जायदाद क्या हैं बतादिजिये जब हम उनको ढूँढ के मालूम करना ही नहीं बल्कि, उनसे मिलने वाली जायदाद को भी लेलेंगें। इस सवाल के जवाब में हमने यह कहा कि!

हमने बहुत बार कहा कि तुम्हारे दूसरे माता पिता भी मौजूद है लेकिन जब तुम उस बात पर उतना ध्यान नहीं दिया। लेकिन अब जब हमने यह कहा कि उनकी जायदाद आपको नहीं मिलेगी तो, फौरन जायदाद (माल या पैसा) मिलेगा कहने पर उस बात को सुनते ही फौरन पूछ रहें हैं कि वो कहाँ रहते हैं? कैसे रहते हैं?

उनके पास ऐसी क्या जायदाद है जो हमें हासिल होनेवाली हैं? जब कृष्ण भगवान पाँच हज़ार साल के पूर्व भगवद्गीता में माता पिता की बात बताया था क्या तबसे तुमलोग इतना दिलचस्पी नहीं दिखा सकते थे? अगर तुम लोग ऐसा कहोंगे कि उन्होने जो कहा वह हमें नहीं मालूम हैं (या याद नहीं है) तो, दो हज़ार साल के पूर्व बैबिल में ईसा (येसु प्रभु) ने जब यह कहा कि **तेरा बाप परलोक में हैं** तो, उस बाप के बारे में, उस बाप से मिलनेवाली जायदाद के बारे में पूछ नहीं सकते थे क्या? चौदा सौ साल के नीचे पाक खुरान में मुहम्मद नबी सहाब ने जब इतना ज़ोर जोर से कहा कि **वह ईश्वर ही हैं जिसने तुझे पैदा किया** (ईश्वर के सिवा कोई और नहीं है) तो तब तुमलोगों में से किसी ने भी कम से कम हलके से तो क्या यह पूछा है कि वह कौन हैं? उसकी जायदाद क्या हैं? बहुत से प्रवक्तायें (नबियों ने), भगवान ने बहुत पहले ही तेरे असली माता पिता के बारे में बताचुके हैं तो, अब तुमलोग यह कैसा सवाल हमसे पूछरहे हो कि आप ऐसी बात बतारहे हैं जिसे अबतक किसी ने भी नहीं कहा हो? जिसतरह तुम नहीं जानते उसीतरह प्रस्तुत काल में अपने असली माता पिताओं के बारे में कुछ स्वामीजियों को भी नहीं मालूम। इसलिये अगर उन्होने नहीं बताया तो उसका मतलब यह तो नहीं हैं कि सच को बताये हुये हम बनाकर बोले जैसा है क्या? जैसे कुछ लोगों ने समझा वैसे हमने माता पिता के विषय में असत्य को नहीं कहा। बहुत से वक्तायें,प्रवक्तायें पिछले जो बातें बतायें थे वही बातें हम भी बताये। अब उस माता पिताओं के द्वारा आनेवाला जायदाद क्या हैं उसके बारे में बताते हैं, सुनिये।

दिखनेवाले शरीर के माता पिता दिखनेवाली जायदाद (संपत्ति) को ही दे सकते हैं। दिखनेवाली जायदाद धन, सोना, वस्तु, वाहन

यानि चल संपत्ति, ऐसा ही गृह, ज़मीन कहलानेवाले स्थिर संपत्ति के सिवा कुछ नहीं रहता। इसमें चल संपत्ति कुछ, स्थिर संपत्ति कुछ रहनेपर भी, वास्तव में सब चल संपत्तियाँ ही है कहसकते हैं। चल संपत्ति यानि अशाश्वित हैं या बदलनेवाली का मतलब रखता हैं। ऐसाही स्थिर संपत्ति यानि शाश्वित से रहनेवाली, नहीं बदलनेवाली का अर्थ रखती हैं। नाम के वास्ते ज़मीनों को कुछ लोग स्थिर संपत्तियाँ बोललेने पर भी, वास्तव में वे भी मनुष्य के लिये चल संपत्तियाँ ही हैं। वह इसतरह हैं कि! दिखनेवाले माता पिता शाश्वितवालें नहीं हैं। वे सिर्फ एक जनम के लिये ही माता पिता हैं तो, एक जनम में भी पूरा वक्त न रहते हुये कुछ वक्त रहकर जानेवाले ही हैं। कहसकते हैं कि जो अशाश्वित लोगों से मिलता हैं वे चीजें भी अशाश्वित ही होते हैं। इसके प्रकार अब तक बाह्य माता पिताओं से शाश्वितवाला कुछ भी नहीं मिला। अब कुछ लोग एक सवाल कर सकते हैं। मनुष्य भी तो कुछ वक्त रहकर जानेवाला ही है ना! ऐसी सूरत में जब मनुष्य ही शाश्वित नहीं हैं तो, उसकेलिये शाश्वितवाला जायदाद या माल क्या होसकता हैं? इसके जवाब को गौर करें तो इसतरह हैं। दिखनेवाले मनुष्य में शाश्वित, अशाश्वित कहलानेवाले दो भाग हैं। हमने यह तो मालूम करलिया ना कि ऊपर से दिखनेवाला शरीर अशाश्वित हैं। ऊपर से न दिखनेवाला जीव सृष्टादि (प्रपंच के पैदाइश) से हैं। खुद (जीव) पहने हुये कई शरीर नाश होने परभी, वह खुद (जीव) नाश हुये बगैर वैसा का वैसा ही हैं। इसीलिये हम यह कह रहे हैं कि जीव शाश्वितवाला हैं, शरीर अशाश्वितवाला हैं। इतनाही नहीं एक जीव शरीर को पहन कर एक जगह पर नहीं रह रहा हैं। एक एक जनम में एक एक प्रांत में, एक एक नाम को लिमिटेड होजा रहा हैं। प्रांत, नाम, शरीर कुछ वक्त तक ही रहते हैं लेकिन जीव शाश्वित से रहता हैं। तो हम ने यह मालूम किया ना कि शरीर से

जुडा हुआ मनुष्य अशाश्वित हैं तो, उसमें का जीव शाश्वित ही हैं। उसी तरह से **दिखनेवाले मनुष्य यानि अशाश्वित माता पिताओं से जो मिलते हैं वे अशाश्वित जायदाद ही हैं। तो शाश्वितवाले माता पिताओं से मिलनेवाली जायदाद शाश्वित ही होती हैं यह सूत्र हैं।** इसके प्रकार वह प्रकृती परमात्मा जो सृष्टादि से जीव के माता पिता हैं वे हमेशा एक ही जैसे हैं। वे नहीं बदले, वह जीवीत्मा भी नहीं बदला जो उनको पैदा हुआ। इसलिये हमने कहा कि शाश्वित माता पिताओं से आनेवाली जायदाद भी शाश्वित ही होती हैं।

हमने पहले ही बतादिया ना कि दिखनेवाले माता पिताओं से चल,स्थिर दोनों संपत्तियाँ मिलने पर भी वे सब चल संपत्तियाँ ही हैं! ऐसा ही प्रकृती परमात्मा से जायदाद की तरह जो मिलें हैं वे चर स्थिर जायदादों की तरह ही हैं कह सकते हैं। ईश्वर से मनुष्य को मिलनेवाले चीज़ों को एक पद्धती के प्रकार चल स्थिर संपत्तियाँ कहने पर भी, उनको और एक तरीके से स्थिर संपत्तियाँ ही कह सकते हैं। शाश्वित माता पिताओं से मिलनेवाले जायदाद शाश्वित ही होते हैं यह सूत्र के प्रकार, हम सबका पिता ईश्वर से मिलनेवाले चल स्थिर सब जायदाद शाश्वित ही होते हैं। ईश्वर से मिलनेवाले जायदादों में भी चल स्थिर इसतरह के दो खिस्म के जायदाद होते हैं क्या?अगर कोई भी इसतरह का सवाल किये तो ऐसा जवाब दे सकते हैं। ईश्वर से मिलनेवालों में से एक जीवितकाल पूरा जो रहते हैं वे चल संपत्ति हैं, एक जीवित या ज़िंदगी का माप न रखते हुये शाश्वित से रहनेवाले को स्थिर संपत्ति कह सकते हैं। सिर्फ एक जीवितकाल में रहकर, मौत के समय खत्म होनेवाली को चल संपत्ति कह सकते हैं। ऐसे चल संपत्ति में मुख्य वाले हार्ट, किड्नीस, लिवर, लन्नस (पेपडे) वगैरा बहुत हैं। ये सब एक जनम केलिये परिमित है फिर भी, बाद वाले

जन्मों में भी ईश्वर ऐसे अवयव को ही दे रहा हैं। शरीर में रहनेवाले सब अवयव सिर्फ एक जनम केलिये ही परिमित होने पर भी, सब जनमों में भी वही अवयव मिलने से, उन सबको भी एक तरीके से शाश्वितवाले लिस्ट में ही दाखिल करके बता सकते हैं।

अब अगर शाश्वित जायदाद की बात करें तो ईश्वर से मिलनेवाले जायदादों शाश्वित जायदाद एक है। उससे बढकर, उससे बडी दुनिया में कुछ और नहीं हैं। उसीको मोक्ष कहते हैं। मोक्ष को ही मुक्ति कहते हैं। एक बार मुक्ति मिलगयी तो वह तेरे पास शाश्वित से रहजाती हैं। वह मिलजाने के बाद जनम जनम में बदलनेवाले चल जायदादों से कुछ काम नहीं हैं। इसलिये मुक्ति जिसे मिलगयी उसे, जनम ही नहीं रहते। मोक्ष एक बार मिलगया तो वह पूरा स्थिर संपत्ति की तरह रह जाता हैं। बहुत ही महत्ववाली स्थिर संपत्ति यानि मोक्ष हमारे बाप ईश्वर के पास से ही मिलती है फिरभी, वह इतनी आसानी से किसी को नहीं मिलती। तुम सचमें सृष्टादि से किसके बेटे हो? यह जानकर, मौन से रहनेवाले ईश्वर के पास इसबात का खुबूल करें कि मैं तेरा बेटा हूँ, तू ही मेरा असली शाश्वित बाप हैं, ऐसा मान कर, खुद में बोलले कर, उसके लायक सब सबूतों को ईश्वर को दिखा सके तो, जब अगर ईश्वर ने मनुष्य जो भी कह रहा हैं वह सब कुछ अपने भर पूर मन के साथ ही कह रहा हैं समझें तो तब जाकर उससे मोक्ष मिलता हैं। मनुष्य ने जो भी कहा वह सब सच है कह कर जाना हुआ ईश्वर ने मनुष्य को मोक्ष दिया तो, वह पाया हुआ मनुष्य दुबारा पैदा न होते हुये ईश्वर का सन्निधान यानि परलोक को जायेगा। जो भी परलोक में दाखिल हुआ चाहे वह कोई भी हो जब तक वह जिस हालत में था वह हालत को खोकर, दैवस्थिति में बदलकर परलोक जायेगा। ईश्वर की जायदाद मोक्ष को पाया हुआ

व्यक्ति, ईश्वर जैसे नहीं बल्कि ईश्वर ही बन जाता हैं। तो अब कुछ लोग इसतरह से सवाल कर सकते हैं कि अगर एक मनुष्य मोक्ष को पालिया तो, अगर वह ईश्वर बनगया तो, जब तक जो ईश्वर था वह क्या होजायेगा? इसका मतलब क्या जब दोनों ईश्वर होंगें? उसकेलिये हमारा जवाब यह हैं कि! सृष्ट्यादि (जब से यह प्रपंच बना तब से) ईश्वर एक ही रहेगा। लेकिन मनुष्य मोक्ष पालिया तो दोनों ईश्वर नहीं होते। चाहे कितने भी मनुष्य मोक्ष को मोक्ष को पायें वे सब, जो ईश्वर पहले से मौजूद हैं उसमें ही मिलजाकर ईश्वर बनजा रहे हैं। अगर हज़ार जीव मोक्ष को पालिये तो भी वे सब एक ही ईश्वर में दाखिल होंगें। चाहे कितने भी नदियाँ समुद्र को पहुँचे वे सब समुद्र जैसा बदल जाते हैं ना! नदियाँ समुद्र को पहुँचने के बाद जब तक उन्हे जो नाम और स्थिति थी उस स्थिति को खोये हुये नदियाँ समुद्र की स्तिथी में, समुद्र कहलानेवाली नाम में बदलजाती हैं ना! इसी तरह शरीर को पहने हुये लोग चाहे कितने भी लोग मोक्ष को पहुँचें तो भी, वे सब ईश्वर की तरह ही रहते हैं। जिसतरह समुद्र में नदी को पहचान नहीं सकते उसी तरह जो व्यक्ति ईश्वर में दाखिल हुआ उसे भी फलाना कह कर पहचान नहीं सकते। चाहे कितने भी नदियाँ आकर मिले पहले से जो समुद्र मौजूद हैं जिसतरह वह अपनी स्थान को हो, अपनी स्थिति को हो, अपनी सांद्रता को (डेन्सिटि) हो नहीं खोती, उसी तरह कितने भी जीव ईश्वर में दाखिल हुये या पहुँचें ईश्वर अपने स्थिति को हो या अपनी धरम को हो नहीं खो रहा हैं। समुद्र को पहुँचने वाली कोई भी नदी हो जिसतरह वह गायब होजाती हैं, उसी तरह ईश्वर में दाखिल हुआ हर व्यक्ति जब तक वह जिस स्थिति, नाम से था उसे खोजाता हैं। भगवद्गीता पुरुषोत्तम प्राप्ति योग अध्याय में सातवाँ श्लोक इसतरह हैं।

श्लोकः ममैवामशो जीवलोके जीवभूत स्सनातनः ।
मनष्षष्ठणींद्रियाणि प्रकृति स्थानि कर्षति ।।

भाव :- जीवात्मा मेरे अंश से ही प्रकृति में पैदाहोने पर भी वह कर्म से जुडे हुये होकर, मन वगैरा इंद्रियों से बाँधा जाकर जन्मों के ओर उधर इधर खींचा जारहा है। ऊपर के श्लोक में जैसे ईश्वर ने बताया वैसे यह मालूम हो रहा हैं कि जो जीवात्मा है वह पहले परमात्मा से यानि परमात्मा के अंश से ही पैदा हुआ हैं। परमात्मा (ईश्वर) में के एक सूक्षातिसूक्ष्म भाग से जो पैदाहुआ वह मनुष्य हैं। इसलिये ऊपर के श्लोक में कहागया कि ***ममैवाँशो जीवलोके जीवभूत।*** यह मालूम हो रहा हैं कि एक जीव ज़मीन पर किसी भी तरह का मनुष्य जैसा भी रहें, जिसतरह समुद्र का पानि बारिश की बूँद होता हैं वैसा ही वह मनुष्य भी ईश्वर की अंश से आया हुआ हैं। ईश्वर से अलग हुआ ईश्वर का अंश यानि जीव करम से बाँधे जाकर, कई जनम पाकर, आखिर में करम के बारे में मालूम करलेके, उससे बाहर पडके, वापिस अपनी पहली स्थान ईश्वर को पहुँचता हैं। वह जीव जिसका कोई कर्म बंधन नहीं हैं जब वह ईश्वर में दाखिल होता हैं तो, क्यों कि जीव ईश्वर की ही अंश होने से, आसानी से ईश्वर में मिलजा रहा हैं। उसीको **जीवब्रह्म ऐक्य संधान** कहसकते हैं। कर्म बंधन से बाहर पडने को ही मुक्यि या मोक्ष कहसकते हैं। जीव जो ईश्वर की अंश हैं कर्म से बाँधे जाकर, कई जन्म पाकर, कभी न कभी अपना ज्ञान को वह खुद जानकर, कर्म कहलानेवाले जैल से छुटकारा (मुक्ति) पाकर, अपना स्थान यानि पहला स्थान को वह खुद पहुँचकर, पहले में वह जो था उसी की तरह (ईश्वर की तरह) बदलजा रहा हैं।

अब आपके तरफ से मैं (जीव) खुद एक सवाल को पूछ रहा हूँ। वह यह हैं कि! शरीर के माता पिता जब अपने बेटे को जायदाद

देते हैं तो एक चल संपत्ति ही नहीं बल्कि स्थिर संपत्ति भी देना हो रहा हैं। एकबार पिता अगर जायदाद देता हैं तो दो प्रकार के जायदादों को एक ही बार में देता हैं। लेकिन ऐसा नहीं दे रहा हैं कि पहले थोडा देकर बादमें थोडे वक्त के बाद दूसरा नहीं दे रहा हैं। तो मनुष्य को ईश्वर शरीर में के अवयवों को चल संपत्ति के तौर पर दे रहा हैं वे देने के बाद कई जनम गुज़र जाने के बाद अगर जीव पसंद से चाहा तो, वह भी जीव के ख्वाहिश या चाहत को वह (ईश्वर) खुबूल किया तो, जब स्थिर संपत्ति यानि मोक्ष को देगा। आपने ऐसा कहा था ना। तो अब मैं यह पूछ रहा हूँ कि जैसे शरीर का बाप दो खिस्मों के जायदाद को एक ही बार दिया हैं वैसा ही जीव का बाप यानि ईश्वर दो प्रकार की जायदाद को क्यों एक ही बार में नहीं दिया? उसके जवाब में मेरा दोस्त या मेरी भलाई चाहनेवाला (आत्मा) जो मेरे सैड में ही हैं वह इसतरह कह रहा हैं। बाहर से दिखनेवाला शरीर के बाप ने दी हुयी चल, स्थिर दो प्रकार के जायदादों को एक मनुष्य पाने के बाद उसके पास जो चल संपत्ति है उसे स्थिर संपत्ति में बदल सकता हैं। ऐसा ही उसके पास जो स्थिर संपत्ति है उसे भी वह चल संपत्ति में बदल सकता हैं। पैसा जो चल संपत्ति हैं उससे ज़मीनों को घरों को जो स्थिर संपत्ति हैं उनको खरीद कर के चल संपत्ति को स्थिर संपत्ति में बदल सकते हैं। ऐसा ही ज़मीन गृहों को बेचकर पैसों में यानि चल संपत्ति में बदल सकते हैं। लेकिन ईश्वर ने दी हुयी चल संपत्ति को स्थिर संपत्ति में बदल नहीं सकते। ऐसा ही ईश्वर ने दी हुयी स्थिर संपत्ति को चल संपत्ति में नहीं बदल सकते।

अगर और भी विवरण से बयान करलिये तो दिखनेवाला पिता दो प्रकार के जायेदादों को एक ही बार दिये जैसा, नज़र न आनेवाला पिता यानि ईश्वर दो जायदादों को एकही बार में नहीं देता

है। पहले सिर्फ चल संपत्ति ही देता हैं। चल संपत्ति से मनुष्य जीवन बिताता हैं। कोई भी इनसान हो जब इसतरह चाहता हैं या ख्वाहिश करता हैं कि मुझे यह चल संपत्ति नहीं चाहिये, मुझे सिर्फ स्थिर संपत्ति ही चाहिये तो, अगर वह पूरे पसंद के साथ स्थिर संपत्ति को चाहा तो उसके पास की चल संपत्ति को लेकर, स्थिर संपत्ति को देना हो रहा हैं। ईश्वर ने दी हुयी दो जायदादों में से अगर एक रहता हैं तो दूसरा नहीं रहता हैं। जो दो जायदाद ईश्वर देता हैं वे परस्पर विरुद्ध हैं। अगर चल संपत्ति शरीर मौजूद हैं तो स्थिर संपत्ति मोक्ष नहीं रहता। अगर स्थिर संपत्ति मोक्ष मिलगया तो चल संपत्ति शरीर नहीं रहता। यह सब कुछ इसतरह हैं तो ईश्वर जो जीव का पिता हैं, पहले सब मनुष्यों को चल संपत्ति शरीर को दिया हैं। इसतरह दिया हुआ शरीर से ही मनुष्य सुकून पाकर ज़िंदगी गुज़ार रहा हैं। वह मनुष्य (जीव) जो शरीर के अंदर हैं दूसरी जायदाद के बारे में ही भूल गया हैं। कुछ लोग तो ऐसा कह रहे हैं कि दूसरी प्रकार की जायदाद यानि मोक्ष से मुझे क्या ज़रूरत हैं। कुछ लोग तो ऐसा कह रहे हैं कि शरीर से मरते जीते रहना ही अच्छा है ना! किसी तरह का भी काम न रहने वाले मोक्ष को पाये तो हमारा वक्त किसतरह गुज़रेगा? (यानि टैमपास कैसे होगा?) ऐसे लोग मोक्ष को नहीं माँग रहे हैं। मोक्ष को पसंद से चाहे तो ही ईश्वर अता करेगा। लेकिन उसे अगर नहीं माँगे तो भी या ना पसंद से माँगे तो भी ईश्वर मोक्ष को नहीं देता। ईश्वर देनेवाले दो प्रकार के जायदादों में से एक को बिना माँगे ही देता हैं। दूसरे जायदाद को वह माँगने पर भी उसके श्रद्धा के मुताबिक ही देता हैं। **अगर श्रद्धा में ज़रासा भी कमी हुयी तो ईश्वर देनेवाला मोक्ष नहीं मिलेगा।**

और कुछ लोग तो इसतरह माँग रहे हैं कि ईश्वर ने दी हुयी चल संपत्ति यानि शरीर भी रहना चाहिये ऐसा ही दूसरी प्रकार की

स्थिर संपत्ति मोक्ष को भी माँग रहे हैं। तो इसतरह देने को ईश्वर खुबूल नहीं करेगा। ईश्वर ने पहले ही, शासन या हुक्म बनादिया कि अगर एक रहे तो दूसरा नहीं रहेगा। उस शासन के प्रकार जब शरीर रहता हैं तो मोक्ष नहीं मिलता हैं। जो लोग शरीर को चाहते हैं वे मोक्ष को नहीं चाहते। अगर चाहे तो भी वह मोक्ष नहीं मिलेगा। कुछ लोगों को तो कम से कम यह तक नहीं मालूम कि नज़र न आनेवाला पिता एक हैं, उस के वजह से मोक्ष मिलता हैं। ऐसे लोग दूसरी जायदाद मोक्ष को माँगते ही नहीं हैं। वे लोग शाश्वित से जनन मरणों को पाते रहते हैं। ऐसे लोगों को यह तक भी नहीं मालूम कि ईश्वर कौन हैं। इसलिये वे ईश्वर को भला बुरा कहने की हालत में रहते हैं। अगर वह ईश्वर को भला बुरा कहें तो ईश्वर उन्हे ज़रुर सज़ा देगा। ज़मीन पर कुछ लोग दिखनेवाले माता पिताओं की जायदाद को भुगतते हुये, उस जायदाद पर अपना हख जताते हुये इस बात पर ज़रा भी गौर नहीं करते कि यह पूरा जायदाद मुझे अपने माता पिताओं से मिला हैं, ऊपर से इसतरह बात करते हैं कि जो जायदाद अब दिया हैं उससे भी श्रेष्ट जायदाद क्यों नहीं दिया (इसतरह दिल को दर्द करनेवाले बातें कहते हुये) अपने माता पिता को असमर्थों की तरह दिखाते हैं। उसी तरह ईश्वर की अहमियत को, ज्ञान को न पहचाते हुये मनुष्य थोडी उमर जाने के बाद बुढापे में अगर आँख नज़र नहीं आये तो, अगर घुटनों के दर्द आते हैं तो, अगर जिस्म नरम होगया तो ईश्वर ने ऐसा शरीर क्यों दिया? क्या वो ऐसा शरीर नही देसकता था जो काले पत्थर से बना हो! या क्या एक ऐसे शरीर को नहीं दे सकता था जो लोह से बना हो? इसतरह से घुटने घटजानेवाले, हड्डियाँ टूटजानेवाले, मसिल्स घुलजानेवाले शरीर को देने केलिये, असल ऐसी शरीर को तय्यार करने केलिये पता नहीं किसने उसे सलह दी होगी। ऐसा पूछने वाले भी हैं।

इसतरह जो जायदाद दिया गया हैं उसे छोडकर, जो जायदाद नहीं हैं, और भी सुख देनेवाला जायदाद हमें चाहिये कह कर माँगने वाले भी हैं। ऐसा माँगने में गलती नहीं हैं लेकिन, जो जायदाद अब दी गयी हैं उसकी अहमियत को नहीं जानना गलत हैं। लेकिन कोई भी ऐसा नहीं समझ रहा हैं कि अपन को जो शरीर दिया गया उसमें बुद्धी कहलानेवाली माल या जायदाद को प्रपंच में किसी और प्राणि को नहीं दिया गया, जो योचना शक्ति हमें दी गयी हैं वह किसी और जाति के जानवरों को नहीं दी गयी, ऐसी बुद्धी दिये हुये अपने माता पिता यानि प्रकृती परमात्मा बहुत ही बडे महान हैं, हर प्रकार की ताकत रखनेवालें हैं। सृष्ट्यादि में ही हमको पैदाकिये हुये, हमारे शाश्वित माता पिता प्रकृती परमात्माओं को मनुष्य न मालूम करने की वजह, और उनकी अहमियत न मालूम होने की वजह मनुष्य का अज्ञान ही हैं।

ज़मीन पर कुछ मनुष्य थोडासा ज्ञान को मालूम करके वह थोडीसी ज्ञान से ही बोलले रहे हैं कि ईश्वर ऐसा रहता हैं। एक एक मत वाले एक एक तरह का ज्ञान को थोडे तद तक ही जान कर, ईश्वर के बारे में बात कर रहे हैं। चाहे वह कौनसा भी मत क्यों न हो संपूर्ण तरीके से ज्ञान को मालूम किये बगैर ही, ईश्वर के बारे में बात करें तो असंपूर्ण से ही रहता हैं। सिर्फ थोडा ज्ञान ही रखनेवाले को ईश्वर कैसा होता हैं, उसकी निजस्वरूप क्या हैं, उसका तरीका क्या हैं यह सब पूरे तरीके से मालूम नहीं होगा। लेकिन बहुत से लोगों को यह बात नहीं मालूम कि जो थोडा बहुत ज्ञान वे जानते हैं उस ज्ञान से ईश्वर, और उस ईश्वर के तरीके (धरम) थोडे ही मालूम होते हैं। इसीलिये हर मनुष्य यही समझता रहता हैं कि ईश्वर के बारे में जितना वह जानता हैं उतना कोई और दूसरा नहीं जानता। ऐसा ही

एक मज़हब या मत के लोग ऐसा समझलेना हो रहा हैं कि जितना अपने मत में ईश्वर के बारे में जानते हैं,उतना दूसरे मत के लोगों को नहीं मालूम हैं। और ऐसा समझलेना भी हो रहा हैं कि जिस ईश्वर के बारे में हमारे मत में बयान कर रहे हैं वही असली (निज) ईश्वर हैं, जिस ईश्वर के बारे में दूसरे मतों में बताते हैं वह असली (निज) ईश्वर नहीं हैं। इसतरह से हर मत के लोग समझलेने से, उनके अपने अपने भावों में ईश्वर अलग अलग तरीकों से समझ में आया हैं। इसीलिये यह बात इनसान को पूरे तरीके से समझमें ही नहीं आया कि आखिर ईश्वर हमारा पिता कैसे हुआ। जब पिता ईश्वर के बारे में ही नहीं पता हैं तो, माता प्रकृती का विषय तो बिलकुल भी नहीं मालूम हैं कहसकते हैं। **जबतक मनुष्य को ईश्वर और भगवान के बारे में समस्त ज्ञान मालूम नहीं होगा तब तक मनुष्य को असली पिता के बारे में मालूम नहीं होसकता। ऐसा ही जबतक मनुष्य को प्रकृती और माया के बारे में समस्त ज्ञान मालूम नहीं होगा तब तक मनुष्य को अपनी असली माँ कौन है यह बात मालूम नहीं होगा।** मुख्य से बोललिये तो सब मतों में सब मूल ग्रंथों में परमात्मा (पिता) के बारे में ज्यादा, प्रकृती (माता) के बारे में कम कहना हुआ। ज्यादा बताये गये परमात्मा के बारे में ही जब मनुष्य को ठीक से समझ में नहीं आया तो, यह कहसकते हैं कि कम विवरण दिये गये माता के बारे में मनुष्य को कुछ भी नहीं मालूम। पिता ईश्वर के बारे में जाननेकेलिये पहले माता प्रकृती के बारे में जानना पडेगा। क्योंकि! प्रकृती ही मनुष्य में माया की तरह जम कर बैठी हुयी हैं। मनुष्य के सर में रहनेवाली माया, ईश्वर के बारे में जानने की कोशीष करनेवाले हर इनसान केलिये रुकावट बनकर दैवमार्ग से बाहर धकेल देरही हैं। अगर माया को पार करना है तो चाहे वे कितने भी बडे क्यों न हो ना मुमकिन हैं। ईश्वर ही इसतरह माया को ताकत देकर रखा हैं। हर

इनसान में गुणों के रुप में माया (सातान) या सैतान जगह बनालेकर हैं। ऐसी माया के बारे में भगवान ने भगवद्गीता विज्ञान योग में श्लोक १४ में ऐसा कहा हैं।

श्लोकः दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेताम तरन्तिते ।।

भाव :- मुझ से तय्यार की गयी मेरी माया पर जीत हासिल करके पार करना ना मुमकिन हैं। लेकिन जो बन्दा (भक्त) **मुझ पर ही विश्वास रख रहा हैं, मेरी ही आराधना कर रहा हैं** सिर्फ वही मेरी माया को पार करके जासकता हैं।

यह बात भगवान ने कही हुयी ईश्वर की बात हैं। इसलिये ईसायियाँ ऐसा समझलेना चाहिये कि यह बात यहोवा ने उनसे कहा है, और मुसलमान ऐसा समझलेना चाहिये कि यह बात अल्लाह ने उनसे कहा हो। ईश्वर ने सर्वमानवों को कहा हैं इसलिये सबको ऊपर का वाक्य स्वीकार करना होगा। ज़मीन पर वह कोई भी मत वाला क्यों न हो मनुष्य ही हैं इसलिये उसे गुण होते हैं। गुणों की सम्मेलन ही माया की तरह हैं। जब तक माया पर जीत हासिल नहीं करेगा तब तक कोई भी व्यक्ति हो उस माया को पार करके ईश्वर तक नहीं पहुँच सकता। इसलिये पहले वह कोई भी मज़हब वाला क्यों न हो उसे माया के बारे में जानने की ज़रुरत हैं। अगर माया के बारे में मालूम नहीं हुआ तो, कोई भी इनसान ईश्वर के बारे में मालूम नहीं करसकता। खास करके माया, मज़हब को आढे रखलेकर मनुष्य को ऐसी गलतफहमी में रख रही हैं कि वह ईश्वर की ज्ञान में ही हैं। **अगर इनसान को माया के हाथ में धोका नहीं खाना हैं तो उसे मतातीत बनना होगा। ऐसा समझना चाहिये कि सारे मत अपने ही हैं।**

सब मतों में जिस ईश्वर के बारे में बताया गया वह अलग अलग नहीं हैं ऐसा भाव मन में आना चाहिये कि सबकेलिये ईश्वर एक ही हैं। जबतक ऐसा खयाल नहीं आता और तब तक अपने अंदर ऐसा भाव रहता हैं कि मेरा मत अलग हैं, तेरा मत अलग हैं, मनुष्य माया के हाथ में ही रहता हैं। माया एक हिंदू (इंदू) को इसतरह का वहम में रखती हैं कि मैं एक आध्यात्मिकवेत्ता हूँ, एक मुस्लिम को इसतरह वहम में रखती हैं कि मैं ही सच्चा ईमान वाला बन्दा हूँ, एक ईसायि को ऐसा भ्रम में रखती हैं कि मैं ही असली येहोवा का भक्त हूँ। इसतरह माया में रहनेवाले लोगों को चाहे किसी को भी हो अपनी मत की ज्ञान को हो, दूसरे मत के ज्ञान को हो समझ में न आये जैसा करती हैं। उसे ऐसा यकीन दिलाति हैं कि अपने मत का ज्ञान मुझे अच्छे से समझ में आया है। इसीलिये पहले तेरे माता के बारे में फिर तेरे बाप के बारे में जानना चाहिये। **माता (माया) को मालूम किये बगैर कोई भी हो पिता (ईश्वर) को मालूम करने का मौका ही नहीं हैं। यह रहस्य मालूम न होते हुये सब मत के लोग अपने आप को ज्ञानियाँ समझलेना हो रहा हैं।**

यहाँ बहुत से लोगों को मुझे एक सवाल पूछने का मौका हैं। वह यह हैं कि! आप आपके रचनाओं में बहुत जगह **त्रैगुण्य विषया वेदा निस्त्रैगुण्यो** तीन गुणों के विषय ही वेद हैं उनकी विसर्जना करो, वेदों को छोडने से गुण विषयों से जुडे हुये माया से बाहर आसकते हो कह कर भगवद्गीता सांख्य योग में ४५ श्लोक में लिखे जैसा कहा हैं। इतनाहि नहीं विज्ञान योग में १३, १४ श्लोकों में

१३) त्रिभिर्गुणमयै र्भावै रेभि स्सर्वमिदम जगत ।
मोहितम नाभिजानाति मामेभ्यय: परमव्ययम।।

''सर्व जगत सात्विक, राजस, तामस गुणों से जुडी हुयी होने से वे गुणों के प्रभावों के वजह से सम्मोहन पाकर (हिप्नटैज़ होकर) नाश न होने वाले मुझे, मेरे परंभाव के बारे में उन्हे कुछ भी नहीं मालूम।''

१४) दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते माया मेताम तरन्तिते ।।

''मुझसे तय्यार की गयी गुणों से जुडी हुयी माया को पार करना ना मुमकिन काम हैं। जो व्यक्ति मेरी ज्ञान को जानकर मेरी आराधना करेगा, वही आसानी से माया को पार करसकता हैं।''

इसीलिये आप ने कहा था ना कि तीन गुण ही माया हैं, तीन गुणों के विषयों से जुडे हुये वेद ही माया के प्रतिरुप है, माया पर जीत हासिल करने के लिये वेदों को छोडदेना चाहिये। अब कह रहे हो कि माया के बारे में मालूम नहीं किया तो ईश्वर के बारे में मालूम नहीं करसकते। उस वक्त कहा कि अगर ईश्वर पर जिसे ईमान हैं वह माया को जीत सकता हैं। अब ऐसा कह रहे हो कि पहले माया को मालूम करो फिर बाद में ईश्वर मालूम होगा। यह सब देख रहे हैं तो यह मालूम हो रहा हैं कि आप द्वंद्व तरीके से (दो बातें) बात कर रहे हैं। इसतरह दो तरीकों से बात करें तो हम कौनसी बात पर यकीन करें? अंतरंग वाली माया पर जीत हासिल करना हैं तो बाहर के वेदों को आपने छोड देनेकेलिये कहा हैं। तो क्या जो ज्ञान अब आप बोल रहे हैं वह वेद नहीं हैं? इसतरह कोई भी सवाल करसकता हैं। उसकेलिये हमारा जवाब यह हैं कि!

मैं ने यह भी तो कहा ना कि पिता के बारे में सिर्फ माँ ही बता सकती हैं, ऐसा ही ईश्वर के बारे में बतानेवाली प्रकृती (माया) ही हैं।

अब भी मैं यही कह रहा हूँ कि ईश्वर माया के द्वारा (वेदों के द्वारा) ही मालूम होगा। यहाँ आप खूब गौर करें तो आपको मालूम हो जायेगा कि हमने जो कहा उसमें कोई गलती नहीं हैं, और हमने दो खिस्म से बात भी नहीं की। अब ध्यान से सुनिये, माया दैवमार्ग में भेज सकती हैं, ऐसा ही माया दैवमार्ग से हटा भी सकती हैं। माया दो तरह के सामर्थ्य रखती है। अगर माया ने चाहा तो कितने भी बडे अखलमंद को हो अज्ञानि में बदलसकती हैं। ऐसा ही अगर माया ने चाहा तो कितने भी बडे अखलकमी मनुष्य को हो ज्ञानि में बदलसकती हैं। इसके मुताबिक यह मालूम हो रहा हैं कि **वेद** कहलानेवाली माया दो खिसम से हैं। यह मालूम हो रहा हैं कि एक खिसम की माया ईश्वर के व्यतिरेक हैं, दूसरे खिसम की माया ईश्वर के अनुकूल हैं। वह माया जो ईश्वर के व्यतिरेक हैं किसी को भी ईश्वर के पास जाने नहीं देती। वह माया जो ईश्वर के अनुकूल हैं, ईश्वर के तरफ जानेवाले को रोके बगैर, उसके रास्ते को सुगम (आसानि) कर देती हैं। इसतरह ईश्वर से तय्यार की गयी माया दो खिसम से काम कर रही हैं। एक ही माया दो तरीकों से प्रभाव दिखा रही हैं। इसीलिये हम माया को दो खिसम से बतायें हैं। ऐसा ही माया स्वरूप वेदों को भी दो खिसम से कहसकते हैं। वेद ईश्वरतत्व को बताये जैसा ही यकीन दिलाकर, ईश्वर को नहीं पहुँचे जैसा ईश्वर के व्यतिरेक मार्ग में मनुष्यों को चला सकती हैं। ऐसा ही वेद ही ईश्वर तक पहुँचे जैसा ईश्वर के अनुकूल मार्ग में भेजसकती हैं।

आखिर वे वेद क्या हैं जो ईश्वर के व्यतिरेक मार्ग में भेजते हैं? ऐसा ही ईश्वर के रास्ते में भेजनेवाले वेद क्या है? पूछें तो वे ऐसा हैं। इंदू (हिंदू) मत में सिर्फ कुछ लोगों को ही वेद मालूम हैं। आज के ज़माने किसी को भी वेदों के बारे में मालूम ही नहीं हैं। और भी कहें

तो आज एक हिंदू ऐसी हालत में हैं कि उसे यह तक नहीं मालूम कि उसका क्या मत हैं ।इसलिये कुछ लोगों को ही वेद चार हैं कह कर, वे १) सामवेद २) यजुर्वेद ३) अधर्वण वेद ४) ऋग्वेद कह कर मालूम हैं। ये चार वेदों को व्यास महर्षी ने लिखना हुआ। व्यास चार वेदों को ही नहीं बल्कि १८ पुराणों को भी लिखा हैं। ये जानलें कि वेद चार भी ईश्वर के व्यतिरेक मार्ग में मनुष्य को भेजनेवाले ही हैं। चार वेद तय्यार होकर लोगों में जाने के बाद जब तक जो थोडे बहुत धरम रहते थे वे भी गायब होगये। इसीलिये उस वक्त ही धरमों को वापिस बताने केलिये भगवान पैदा हुआ। अधर्म बढने के लिये चार वेदें तीन गुणों से मिश्रित माया की सूरत में बदलकर लोगों को प्रेरित की हैं। तब ही ज़मीन पर धर्मसंस्थापना के लिये पहले अवतार की तरह भगवान श्रीकृष्ण पैदा हुआ। एक बार धरम पूरे स्थायि में स्थापना किये जाने केलिये ईश्वर की अंश तीन बार पैदाहोने की ज़रुरत हैं। उसके प्रकार गौर करें तो एक बार भगवान की आमद द्वापर युग के आखिर में हुआ। बाद में दूसरी बार प्रवक्त की आमद भी होगयी। अब तीसरी आमद आदरण कर्ता की तरह आना बाकी हैं। यह सब ऐसा है तो माया के रुपवाले चार वेद ईश्वर की व्यतिरेक मार्ग की सूचना करते हैं तो, ईश्वर के तरफ अनुकूल मार्ग की सूचना करनेवाली पाँचवीं वेद भी एक हैं। उसीको **पंचम वेद** कहते हैं। कुछ लोग ऐसा कहना होरहा हैं कि भारत ही पंचम वेद हैं, भागवत ही पंचम वेद हैं। वास्तव में ये दो भी पंचम वेद नहीं हैं। यह जानलेना चाहिये कि भारत चरित्र हैं तो, भागवत पुराण हैं।

चार सौ साल के नीचे पोतुलूरि वीरब्रह्मम जी ने अपने कालज्ञान में पंचमवेद **साँद्रसिंधु वेद के बारे में बताया था। साँद्रसिंधु वेद का कर्ता आनंद गुरु हैं। साँद्रसिंध वेद ज़मीन पर नहीं हैं। उसके**

बारे में समग्र से बताने वाला आनंदगुरु हैं । इतना ही नहीं साँद्रसिंधु वेद मार्ग में सकलजाति के लोग (सारे मत के लोग) चलेंगें बा भी कहा हैं। जो सवाल आपने मुझे पूछा उसमें आपने ऐसा सवाल किया कि आप जो कह रहे है वह वेद नहीं हैं क्या? उस सवाल के सही जवाब में हम जो कह रहे हैं वह भी वेद ही हैं। कालज्ञान में ब्रह्मम् जी ने जो कहा हैं उस साँद्रसिंधू वेद को ही हम कह रहे हैं। यह मालूम है कि मेरे द्वारा जो बोली जारही हैं वह दैवमार्ग ही हैं। लेकिन मुझे यह नहीं मालूम है कि वह साँद्रसिंधू वेद हैं। वह विषय को ब्रह्मम जी ने अपने कालज्ञान में कुछ जगह लिखने की वजह से वह बात हमें अभी मालूम हुयी। मैं अपने आप के बारे में ऐसा समझनेवाला हूँ कि बाहर की प्रपंच में खुद को न बढालेते हुये अपने आप को कम करलेना चाहिये। मैं ऐसा समझनेवाला हुँ कि मुझे बाहर की प्रपंच को मालूम हुये बगैर रहना चाहिये। तो वीरब्रह्मम जी ने अपने कालज्ञान में ऐसा लिखा हैं कि **प्रबोधाश्रम उन्नत ज्ञान रखती हैं** इसलिये मेरे बारे में बाहर थोडा मालूम होना हुआ हैं। इतनाही नहीं यह भी लिखे थे कि **प्रबोधाश्रम वाले शयनाधिपति के गुण सखनेवाले हैं, शयनाधिपति ही आनंदगुरु हैं, गुरुस्वामि जो सिद्धाँत शिरोमणि हैं उनका सिद्धाँत मुख्यहोता है बा**, और भी हमें बहिर्गत करते हुये लिखे हुये वाक्य होने से हम ज्ञान बोलनेवाले गुरु हैं कहकर बाहरआना पडा। वास्तव में हम जो भी विषय बोल रहे है उन विषयों को सारे मत के लोग पसंद करना, हमने जो कहा वह त्रैतसिद्धाँत होने से, चार सौ साल के पूर्व लिखी हुयी काल ज्ञान से बराबर होगयी। जो हम कह रहे हैं वही **साँद्रसिंधू वेद** हैं कह कर खुबूल करना ही पडेगा क्योंकि हमारे रचनायें पूरे नये होने के कारण, उसमें ऐसे नये ज्ञान के विषय है जिसके बारे में अबतक कोई नहीं जानता।

जैसे ब्रह्मम जी ने कहा कि **सिद्धाँत शिरोमणि गुरुस्वामि सिद्धाँत मुख्य होजायेगा बा और साँद्रसिंधु वेद मार्ग में सकलजाति के लोग चलेंगें बा** यह बात हमें अभी अभी मालूम हुआ। तो इससे पहले ही यही विषय को हमने पहले भी बहुतबार कहा था कि जो ज्ञान हम बोल रहे हैं उस पर सब मत के लोग चलेंगें, तीन मत भी एक होजाकर त्रैतसिद्धाँत के ज्ञान को बडे महत्व से बोललेंगें। यह सच तो सब जानते ही है जैसे हमने कहा वैसे होरहा हैं। इसलिये ब्रह्मम जी ने हमारे बारे में जो लिख्खत लिख्खी हैं उसे न नहीं कहपारहे हैं। हम इस बात को खुबूल करते हैं कि हम जो भी कह रहे हैं वह साँद्रसिंधू वेद ही हैं जिसके बारे में कोई नहीं जानता। अबसे तखरीबन तीन सौ पचास साल के नीचे जीवसमाधि पाये हुये ब्रह्मम जी, अपने समाधि से बाहर आकर जनम लेकर तीस साल हो रहे हैं। उनकी उमर अब तीस संवत्सर हैं। उन्होने अपने कालज्ञान में कहा है कि और थोडे वक्त के बाद हमारे पास आयेगा, आनंद गुरु ही मेरा गुरु हैं। जब वो आयेगा तो यह बहिर्गत करेगा कि मैं कौन हूँ। कम से कम जब तो मेरे बारे में और मेरे आत्मा के बारे में बाहर पडसकता हैं। इसलिये जो सवाल आपने पूछा उसके बदले में मैं यह कह रहा हूँ कि हम जो कह रहे हैं वह भी वेद ही हैं हमसे जो वेद बतायी जा रही हैं दैवज्ञान को सुगम करके, मनुष्य को मोक्ष (ईश्वर के सन्निधान) को भेज सकती हैं।

अबतक हमने जो ज्ञान बताया वह ज्ञान पूरा ईश्वर संबंधित होकर हैं। सारे मतों को भी आमोदयोग्य हैं। सब मत के ग्रंथों में भी वह ज्ञान हैं जो हमने कहा हैं। कुछ लोग हसद से अज्ञान से हम जो ज्ञान कह रहे हैं उसके खिलाफ बोलें तो भी, वहीं मत के कई लोग ऐसा बोलले रहे हैं कि हमारा ज्ञान बहुत ही महत्ववाला हैं। अब भी

''माता पिता'' कहनेवाली यह छोटीसी ग्रंथ में के विषयों को कोई भी खंडन नहीं करसकते। क्यों कि **सिद्धाँत से जुडी हुयी ज्ञान की खंडन नहीं होसकता।** एक कहावत कहते है ना कि माता का समाचार क्या मामा नहीं जानता! उसीतरह माया का समाचार योगी को ज़रुर मालूम होकर रहता हैं। इसीलिये क्योंकि मैं सिद्धाँतकर्ता हूँ मुझे यह बात ज़रुर बताना ही पडेगा कि सबकेलिये माता पिता कौन हैं। वही विषय को ही मैं कह रहा हूँ कि मालूम करो कि तेरा असली पिता कौन हैं, तेरा असली माता कौन हैं। मेरे तरफ से मैं यह कह रहा हूँ कि जिसतरह (बच्चा) माता के तरफ से पिता के तरफ जाताा हैं वेसा ही, साँद्रसिंधु वेद जिसे वेद कहते हैं लेकिन वेद नहीं हैं उस साँद्रसिंध वेद के बारे में जान कर असली माता पिताओं को फैन्डौट करना चाहिये। यहाँ पे कुछ लोग पूछ सकते हैं कि आप खुद के बारे में या अपनी महत्वता के बारे में खुद बोलले (बयान करले) रहे हैं। उसके जवाब में जब मुझे यह तक नहीं मालूम कि मैं कौन हूँ तो मेरी महत्वता के बारे में मैं कैसे बयान करसकता हूँ। मेरे बारे में मैं ने नहीं कहा मगर, मेरे बारे में दूसरों ने जो कहा वही मैं ने तुमलोगों को बताया। मेरे बारे में बताये हुये पोतुलूरि वीरब्रह्मम जी लोक में होनेवाले कुछ सौ सालों के भविष्य को पहले ही बताये हुये महान व्यक्ति हैं। इसलिये उन्होने जो कहा वही बात को संदर्भ आया है इसीलिये मैं ने तुमलोगों से कहा था। हमने जो भी कहा अगर वह समझमें नहीं आया तो, अगर अलग खिसम से समझ में आया तो वह भी माया ही होता हैं। इसलिये ईश्वर से दूर करनेवाली माया को छोडकर, ईश्वर के पास लेजानेवाली माया की बात सुनते हैं। अब हम उस समाचार के बारे में और भी देखते हैं जो असली माता पिता के बारे में बताती हैं।

एक मनुष्य को अपने बाह्य पिता कौन हैं इसकी जानकारी अपनी बाह्य माता को ही बताना पडेगा। सिर्फ माता को ही यह बात मालूम होता हैं कि अपने बेटे का पिता कौन हैं। उसी तरीके से सिर्फ प्रकृती ही जानती हैं कि ईश्वर कौन हैं। बाह्य शरीर की माता अपने बेटे से प्रत्यक्ष से बात करती हैं, इसलिये माँ ही पिता को दिखा रही हैं। यहाँ जीव को पिता के स्थान में रहनेवाले परमात्मा को, माता के स्थान में रहनेवाली प्रकृती को ही दिखाना पडेगा। तो प्रकृती मनुष्य से बात नहीं करती। इसलिये प्रकृती ईश्वर के बारे में जीव को नहीं बतासकती हैं। ऐसी सूरत में ईश्वर ही जीव को ईश्वर की विषय को बताने केलिये प्रकृती के तरफ से काम करना पडा। प्रकृति के तरफ से काम करके, ईश्वर की विषय को बताने केलिये, ईश्वर की अंश भगवान की तरह आरही हैं। प्रकृती माया जैसा बदलकर हमेशा मनुष्य के अंदर ही हैं तो, ईश्वर तो भगवान की सूरत में कभी कभार ज़मीन पर आरहा हैं। प्रकृती मनुष्य में माया की तरह बदलगयी है तो, ईश्वर मनुष्यों के बीच भगवान की तरह बदलकर आता हैं। भगवान प्रकृती से तय्यार हुयी शरीर को पहनकर दिखनेवाले मनुष्य की तरह पैदा होता हैं। ऐसा पैदाहुआ व्यक्ति जिस परमात्मा के बारे में प्रकृती को बतानी चाहिये थी, उस विषय को प्रकृती के तरफ से इनसान के रुप में आयाहुआ परमात्मा (भगवान) खुद बतायेगा। प्रकृती माया के रुप में मनुष्य के अंदर हैं। इसलिये प्रकृती के तरफ से काम करने केलिये भगवान के सूरत में आया हुआ ईश्वर,उस माया की तरह बिहेव (बरताव) करेगा जो प्रकृती की बदली हुयी शकल हैं। जिसतरह माया ईश्वर के मार्ग में रुकावट करने केलिये हो, ईश्वर के मार्ग में सुगम करने केलिये हो योग्यता रखती हैं, उसी तरह जो शक्स भगवान की तरह आया है वह प्रकृती यानि माया की तरह प्रवर्तन करते हुये जो लोग ज़रुरत है उनको, जो लोग योग्यता

रखते हैं उनको ईश्वर की राह में पहुँचाता हैं। बेकार लोगों को, जो लोग योग्यता नहीं रखतें हैं उन्हे ईश्वर के रास्ते से हटा देता हैं। भगवान को ही गुरु भी कहसकते हैं। अगर गुरु या भगवान ज़मीन पर आयें तो, जिन लोगों को ज्ञान पर श्रद्धा हैं सिर्फ उनको गुरु की तरह दिखता हैं। जिनको श्रद्धा नहीं हैं उन्हे माया की तरह दिखके, ऐसा करते हैं कि ईश्वर की ज्ञान मालूम न हो। ईश्वर अपने प्रकृती से तय्यार होने वाली देह की अधिष्टान करके, माया के गुण भाव रखते हुये भगवान की तरह पैदा होरहे हैं। क्योंकि भगवान ही ईश्वर की अंश है होने से ईश्वर की ज्ञान को बतायेगा। ऐसा ही भगवान प्रकृती की अधिष्टन करके प्रकृती का किरदार निभाने की ज़रुरत हैं होने से, माया बनकर ईश्वर की ज्ञान को मालूम हुये बगैर करता हैं।

भगवान (गुरु) बतानेवाली एक ही ज्ञान मनुष्य को समझमें आने में सव्य से हो, अपसव्य से हो दो खिसमों से समझमें आता हैं। अगर सव्य (सही) से समझमें आया तो वह दैवज्ञान की तरह दिखके ईश्वर के तरफ भेजती हैं। अपसव्य से समझमें आया तो जो मालूम किया वह दैवज्ञान जैसे समझमें न आते हुये ऐसा लगेगा कि यह ज्ञान ही नहीं हैं इसतरह उनको ज्ञान से दूर हुये जैसा करके माया के तरफ भेज सकती हैं। इसके मुताबिक गुरु (भगवान) माया के स्थान में रहकर दैवमार्ग से, दैवज्ञान से दूर करसकता हैं। ऐसा ही दैवमार्ग को, दैवज्ञान के नज़दीक भी करसकता हैं। इसलिये भगवद्गीता में ज्ञानयोग में श्लोक छे में **''प्रकृतिं स्वामधिष्टाय संभवाम्यात्म मायया''** मेरी प्रकृती की अधिष्टान करके माया के तरफ से (माया की तरह) मेरी आत्मा पैदा होरही हैं कह कर बताना हुआ। ईश्वर भगवान होकर पैदाहोने पर भी, ईश्वर के बारे में जिसे बताना चाहिये वह भगवान ही होने पर भी वह प्रकृती के तरफ से माया की तरह आया

हैं कह कर मालूम हो रहा हैं। इसीलिये उसने जो ज्ञान कहा वह ज्ञान तो एक ही हैं लेकिन, वह ईश्वर के तरफ हो या माया के तरफ हो लेकर जाति हैं। यह बात अच्छे से समझमें आने केलिये एक मिसाल को देखते हैं। हमने यह बयान करलिया ना कि दिखनेवाली शरीर की माता, शरीर के पिता के बारे में बताती हैं, सिर्फ एक माता ही जानती हैं कि बच्चे का पिता कौन हैं। ऐसी स्थान में रहनेवाली एक माँ को तीन बेटे हैं। तीन बेटें पाँच साल के व्यवधि में पैदा हुये। तीन बेटे पैदा होने के बाद एक साल को पिता बेपार के लिये विदेश को गये थे। वहाँ से आनेकेलिये १२ साल का वक्त लगा। शोहर आने के समय तक अपने बच्चों में छोटे को १३ संवत्सर है तो, दूसरे को १६ साल, बडे को १८ साल की उमर हैं। छोटे उमर में ही अपने पिता के बारे में उन्हे मालूम न होने से, थोडे वक्त के बाद आये हुये पिता के बारे में माँ को बताना पडा। क्योंकि अपने बच्चों के पिता कौन हैं यह रहस्य सिर्फ माँ ही जानती हैं इसलिये माँ ने ही यह बताया कि यही तुम्हारे पिता हैं। माँ ने एक ही भाव, एक ही अर्थ वाले विषय को सभी को समान (बराबर) से कहा था। सब एक ही समय में एक ही जगह मौजूद न होने के कारण, तीन बेटे अलग अलग कामों में, अलग अलग जगहों में करने से, सबको एक ही बार बोलने का मौका नहीं रहा। तीन बेटे अलग अलग वक्तों में जब घर आये थे तब उनको अलग अलग से ही कहना हुआ कि यही तुम्हारा पिता हैं।

पिछले रात को घर आया हुआ बडे बेटे को उसके पिता के बारे में माँ ने कहा था। लेकिन वह उस समय में नींद के नशे में होने के कारण माँ ने जो बात कहा उसे सुनने पर भी यह तुम्हारा पिता हैं कहलानेवाली बात उसे ''यह हमारा पिता हैं'' कहे जैसा समझमें आया हैं। जब अपनी माँ ने जो बात कही वह बात अलग खिसम से

समझमें आकर, माँ ने जिस मनुष्य को दिखाया उसे अपना **दादा** समझा। दूसरे दिन उदय (सुबह) ही दूसरा बेटा आया तो, जो बात बडे बेटे से कहा था वही बात उसे भी बताते हुये कहा कि यह तुम्हारा नीजीबाप हैं। लेकिन दूसरे बेटे ने माँ ने जो कहा उस विषय को श्रद्धा से नहीं सुना इसलिये उसे ऐसा समझमें आया कि यह तुम्हारा छोटा बाप हैं यानि **चाचा** हैं कहे जैसा समझ में आया। वही दिन शाम के वक्त में घर आया हुआ छोटे बेटे को माँ ने कहा कि यही मेरे शोहर हैं। क्योंकि उसकी उमर छोटी हैं इसलिये उसे यह नहीं मालूम कि माँ का शोहर उसे क्या होता हैं यह भी नहीं मालूम। ऐसी सूरत में माँ ने जिस व्यक्ति को दिखाया था उसे अपना **रिश्तेदार** समझा लेकिन उसे पिता की तरह समझमें नहीं आया। इसतरह तीन बेटों को माँ ने जो सच कहा वह समझमें न आकर अपने बाप को एक बेटा दादा जैसा समझा तो,एक बेटा चाचा जैसा समझा, और एक बेटा रिश्तेदार समझ करलिये। पिता के विषय के बारे में बतायी हुयी माँ उसी दिन रोग (बीमारी) से हास्पिटल गयी थी। उसकी बीमारी के हिसाब से इलाज करने केलिये डाक्टरों ने कहा कि वह हास्पिटल में महीने भर बेड पर ही रहना होगा (यानि अड्मिट होना पडेगा कहा) तो उनकी माँ वहीं पर रहगयी। क्योंकि उसकी सहद ठीक नहीं हैं इसलिये उसका सहोदर (भाई) वैद्यशाला को जाकर, अपनी दीदी, भाईजान से बात करने के बाद अपने भान्जों से बात करने केलिये, दीदी के घर को जाकर वहीं कुछ दिन रहगया हैं। तब उसे (मामा को) यह मालूम हुआ कि उसकेलिये भाईजान, दीदी केलिये शोहर, भान्जों के लिये पिता होनेवाले व्यक्ति को अपने भान्जों ने गलत समझ करलिये। उसे इस बात से आश्चर्य हुआ कि स्वयं पिता को तीन बेटे भी पिता की तरह समझ नहीं करलिये और अलग अलग तरह बोलले रहे हैं। क्योंकि यह व्यक्ति उनका मामा हैं, और उनकी माँ उसकी दीदी होने

से, उनका बाप स्वयं भाईजान होने से, उसे यह सच समझमें आगया कि अपने भान्जे पूरे तरीके से गलतफहमि (भ्रम) में हैं। उनमें के भाव को मिटाकर तीन भान्जों को समझाया कि उन तीनों का पिता एक ही हैं, तुम लोग पैदा न होने के पहले से ही तुम्हारे पिता के बारे में मैं जानता हूँ। सिर्फ छोटा बेटा एक ही मामा की बात पर यकीन करके मानलिया। बाकी दोनों अपने मामा की बात पर यकीन किये बगैर उनके अपने अपने बहसों को सुनायें। एक भान्जे ने कहा कि मेरी माँ ने मुझ से ऐसा ही कहा हैं तो दूसरे ने कहा कि नहीं नहीं मुझे इसतरह ही बतायी हैं। पिता को पकड कर एक जन कहता हैं कि वह मेरा दादा हैं तो दूसरा कहता हैं कि चाचा हैं। उनके शक को दूर करने केलिये उनकी माँ वहाँ पर नहीं है। इसलिये उनका मामा ने समझा कि चलो, जब इनकी माँ यहाँ पर आयेगी तब इनके शक को वह खुद दूर करदेगी। तो उनकी माँ हास्पिटल में ही मरगयी। बीवी की मौत को देखकर शोहर भी हार्ट रुक कर मरगया। तीन बेटे इस बात से दुखित हुये कि हमारी माँ मरगयी तो सिर्फ उसमें एक ही ऐसा समझा कि अपने माँ के साथ बाप भी मरगया, तो बाकी दोनों में से एक ने समझा कि माँ के साथ चाचा भी मरगया तो दूसरे ने समझा कि माँ के साथ दादा भी मरगया। क्योंकि उनकी माँ न होने से दोनों को पिता की बात नहीं मालूम हुयी। मामा के कहने के बावजूद भी वे सुनने की हालत में नहीं थे। वे दोनों उन्हे जो असत्य समझमें आया उसीको सत्य समझते हुये, बाद में मालूम हुयी सत्य को असत्य की तरह हिसाब करलिये।

मामा के कहने के बावजूद भी वे दोनों सुने बगैर उनके पिता को वे खुबूल किये बगैर एक चाचा कहरहा हैं तो एक दादा कह रहा हैं। सिर्फ एक जान खुबूल किया कि वह अपना पिता हैं। पिता के

गुज़रजाने के बाद जायदाद को खुद मामा ही बेटों को बाटकर देना चाहा। तो मामा ने तीन भान्जों को एक नियम रख्खा हैं। वह नियम के बराबर जैसे वह कहता है वैसे अपने भाईजान को पिता की तरह जो खुबूल करेगा उन्ही को पिता के जायदाद में भाग (शेर) मिलेगा। पिता की तरह जो खुबूल नहीं करता उनको पिता के जायदाद में से कुछ भी नहीं मिलेगा। जब भी दोनों ने कहा कि अपने विश्वास को छोडकर अलग से हम किसी भी सूरत में नहीं मानेंगें इसलिये उन्हे जायदाद में हिस्सा नहीं मिला। लेकिन छोटे बेटे ने ऐसा समझा कि अपनी माँ ने शोहर कहा तो जबतक मैं ने उसे रिश्तेदार की तरह समझकरलेना मेरी गलती है। जो मेरे मामा ने कहा वही सच हैं,सच के प्रकार जिसे वह रिश्तेदार समझा वह व्यक्ति रिश्तेदार नहीं हैं, सच में मेरा पिता हैं कह कर मालूम होने से, छोटे बेटे को ही पिता की पूरी जायदाद मिली हैं। यह समझमें आ रहा हैं कि क्योंकि बाकी दोनों ने खुबूल करने से इनकार किया इसलिये पिता के जायदाद में से उन्हे कुछ भी नहीं मिला। यह सबको गौर करें तो माँ ने जो सच कहा उसे बेटों ने पहले ही गौर न करने की वजह से पिता के जायदाद में से उन्हे कुछ भी हासिल नहीं हुआ। यह मिसाल में माँ को प्रकृती की तरह, पिता को परमात्मा की तरह, बेटों को जीवात्मा यानि मनुष्यों की तरह हिसाब करले के देखलेना चाहिये। माता प्रकृती ने पिता के बारे में बोली हुयी मूल ग्रंथों की तरह हिसाब करलेते हैं। जैसे माता ने तीन बेटों को एक ही पिता के बारे में बताया, वैसे तीन मत के ग्रंथो में एक ही ईश्वर के बारे में बोला हुआ तरीका हैं तो तीन मूल ग्रंथों का उद्देश,भाव सब एक ही पिता (ईश्वर) के बारे में बता रहे हैं फिर भी, वह समाचार एक एक को एक एक तरीके से समझमें आया। जैसे मूलग्रंथ कहे हैं वैसे यह मालूम न किये बगैर कि सबकेलिये पिता एक ही हैं, मनुष्य जो ईश्वर के बेटे हैं तीन

तरीकों से बोलले रहे हैं। जैसे एक समझा कि दादा हैं तो दूसरा चाचा और तीसरा रिश्तेदार समझा वैसे ही आज तीन मत के लोग जो कह रहे हैं वह एक ही ईश्वर के बारे में हैं तो, वे उस ईश्वर को अलग अलग भावों से हिसाब करलेके एक यहोवा कह रहा हैं तो, एक राम कह रहा हैं और एक अल्लाह कह रहा हैं। तीनों बेटे दादा, चाचा, रिश्तेदार कह कर अलग अलग से बोललेने पर भी वह व्यक्ति एक ही है, ऐसा ही आज तीन समाज के लोग, तीन नामों से जिसे पुकार रहे हैं वह एक ही ईश्वर हैं कह कर प्रकृती परमात्मा को खूब जाने हुये मामा जैसे योगियाँ कहने पर भी, मत या मज़हब के अंधेपन में इस बात को खुबूल नहीं करपा रहे हैं कि ईश्वर एक ही हैं। जो योगि हैं वह मामा जैसा तीन मतों से भी समान संबंध रखते हुये,तीनों की भलाई चाहकर **तुम लोग गलती से धोका खा रहे हैं। जो तुम लोगों को समझमें आया वह सच नहीं हैं। जिस तरह माँ की बात को तुम लोग ठीक से समझ नहीं करलिये वैसा ही,मूल ग्रंथो में के वाक्यों को तुमलोगों ने ठीक से समझनहीं करलिये** इसतरह साफ कहने पर भी योगी की बात नहीं सुन रहे हैं। लेकिन कोई भी योगी के बारे में ऐसा नहीं समझ रहा है कि योगी अपने से पहले प्रकृती परमात्मा के विषय के बारे में जानता हैं, वह उनसे रिश्ता रखता हैं,उसे अपने पिता के बारे में पूरी जानकारी मालूम हैं, (यह सब न जानते हुये या गौर न करते हुये) नसीहत देनेवाले योगी के बातों को हिसाब नहीं कर रहे हैं। आखिर में जो व्यक्ति इस बात का अहसास करेगा कि मामा जैसा योगी ने जो कहा वह मतातीत ज्ञान हैं,गलत होने का कोई छान्स ही नहीं है वैसा व्यक्ति इसबात को खुबूल करेगा कि सब मतों के लिये भी ईश्वर एक ही हैं। इसतरह पिता ईश्वर बाखी सबका भी पिता है कह कर मालूम होने से, ईश्वर (पिता) की जायदाद यानि परलोक (मोक्ष) को पा रहा हैं। माँ जैसी मूल ग्रंथों में प्रवक्ताओं के

बातों को जिन्होने गलती से समझ करलिया वे ऐसा समझते हैं कि जिस ईश्वर के बारे में उन्होने मालूम किया वह अलग हैं, दूसरों का ईश्वर अलग हैं, ऐसा समझकर दूसरे मतों के ईश्वर को अपने ईश्वर की तरह,अपने ईश्वर को दूसरे मतों के ईश्वर की तरह खुबूल न करने से उनको मोक्ष या परलोक नहीं मिल रहा हैं।

आज ज़मीन पर सब मानव एक ही ईश्वर से तय्यार किये जाने के बावजूद, मनुष्य मतों या मज़हबों में अलग होजाकर कह रहे हैं कि तुम्हारा ईश्वर हमारा ईश्वर नहीं हैं,हमारा ईश्वर तुम्हारा ईश्वर नहीं हैं। एक मत के ईश्वर को दूसरे मत के लोग हसद से (असूय गुण से) देख रहे हैं। जो लोग यहोवा को खुबूल नहीं करते वे कह रहे हैं कि ईश्वर सिर्फ अल्लाह ही हैं। तो कुछ लोग कहते हैं कि अल्लाह ईश्वर नहीं हैं राम ही ईश्वर हैं। और कुछ लोग ये दोनों में से ईश्वर कोई भी नहीं हैं सिर्फ एक यहोवा ही ईश्वर है। एक ही पिता तीन बेटों में से एक को दादा की तरह, एक को चाचा की तरह,एक को रिश्तेदार की तरह मालूम हुये जैसा, एक ही ईश्वर तीन मतों के लोगों केलिये तीन नामों से मालूम हो रहा हैं। वास्तव में तीन बेटों ने जो तीन नाम समझलिये वे नाम जिसतरह उन बच्चों के पिता पर लागू नहीं होते हैं, उसीतरह तीन मत के लोग जो तरीके को समझ करलिये वे विधान ईश्वर पर लागू नहीं होते। क्योंकि ईश्वर को न रुप हैं न नाम न काम। इसलिये ईश्वर को रुप, नाम, क्रियारहित कहते हैं। जिन लोगों को यह सच नहीं मालूम उनमें से कुछ लोग ऐसा समझ रहे हैं कि ईश्वर फलाना रुप से हैं, तो कुछ लोग ऐसा समझ रहे हैं कि फलाना नाम से हैं तो, कुछ लोग ऐसा समझ रहे हैं कि वह फलाना काम करता हैं। क्योंकि वे नहीं जानते कि जो वे समझ रहे हैं वह सच नहीं हैं इसलिये असली और सच्चे ईश्वर को मज़हब के

लोग जाननहीं पा रहे हैं। वह योगी जो प्रकृती और परमात्मा का विधान जानता हैं मतों से अतीतवाला ज्ञान को बताने की बावजूद भी कुछ लोग समझ नहीं पा रहे हैं। अगर कोई भी समझ करलेके असली सच को मालूम करलिये तो वे आसानी से मोक्ष पा सकते हैं।

जो कुछ ज़मीन पर है वह सब पैदा किया गया हुआ हैं। ज़मीन, आकाश, बीच के हवा, अग्नी, पानी उनको आधार करलेके जीनेवाले समस्त जीवरासियाँ, समस्त चीज़ें, समस्त वाहन सबकुछ पैदा किये गये हुये ही हैं। एक सृष्टिकर्ता हैं जिसने यह समस्त को पैदा किया। वही ईश्वर हैं। सबलोग ईश्वर से पैदाकिये गये हुये लोग ही हैं, फिर भी यह किसी को नहीं मालूम कि ईश्वर कैसा रहता हैं। जिस वक्त हम उस के ज़रिये पैदाकिये गये, उसी वक्त वह हम सबकेलिये पिता होगया हैं। इसीलिये उसे जगत पिता कहसकते हैं। पिता यानि कारण वाला मतलब जिस के कारण यह सब बना, माता यानि जो कार्य हुयी। सबलोगों की, सब चीज़ों केलिये जो कारण बना उसने पहले प्रकृती को तय्यार करके, प्रकृती को कार्य की तरह बनालेकर सर्व को तय्यार किया। पैदा हुआ हर मनुष्य को बचपन से प्रकृती पंच भूत की तरह दिख ही रही हैं। यह किसी को नहीं मालूम कि आकाश, हवा, आग, पानी, भूमि यह पाँच भागों की प्रकृती ही जगतमाता हैं। प्रकृती दिखने पर भी, प्रकृती हमारे शरीर में गुणों के रुप में माया की तरह रह कर मनुष्य की पर्यवेक्ष करते हुये,अपने शोहर परमात्मा को जो पसंद हैं उन्ही को ईश्वर के तरफ गये जैसा, जिन्हे वो पसंद नहीं करता उनको ऐसा भ्रम में डाल देती हैं कि वे दैवमार्ग में ही हैं, फिर अपने माया को पार करने नहीं देती। प्रकृति जनित (प्रकृती से पैदा हुये) त्रि गुण रुपवाली माया को वह मनुष्य पार नहीं करसकता जिसके पास दैवज्ञान नहीं हैं। माया को पार

करना दुस्साध्य हैं। इसीलिये पोतुलूरि वीरब्रह्मेंद्र जी अपने तत्व में त्रि गुण रुपवाली माया को उद्देश्य में रखते हुये **तीन तालाब पार नहीं करसकते बा, इस दुनिया के मूढ जन (मूढ लोग)** कहनेवाली तत्वको बताया हैं।

तामस, राजस, सात्विक यह तीन गुणों की सम्मेलन माया पर जीत हासिल करना हैं तो, पहले मनुष्य को दैवज्ञान जानकर ईश्वर के धर्मों को संपूर्ण से मालूम होकर रहना चाहिये। ईश्वर के धर्मों को ज़रा भी ठीक से मालूम नहीं किये तो भी, अलग भाव से समझ करलिये तो भी धरम अधर्म की तरह समझमें आकर माया को अच्छा मौका दिये जैसा होगा। अगर ईश्वर के धर्मों में कोई एक धर्म भी ठीक से समझ में नहीं आया तो भी मनुष्य को ईश्वर के तरफ जाने नहीं देते हुये, खुद को जो मालूम है वही धर्म है जैसा यकीन दिलाकर, ईश्वर से दूर करती हैं। चाहे वह कोई भी इनसान क्यों न हो, कितना भी बडा ज्ञानी का नाम पाया हुआ हो, जिसे ईश्वर के धर्म ठीक से नहीं मालूम उसे अपने दरवाज़े से (द्वार से) माया नहीं छोडती। इसलिये ऐसी हाल में अपने धर्म ज़मीन पर सबको मालूम हुये जैसा ईश्वर ने पहले ही सृष्टादि में ही बता चुका हैं। ईश्वर ने आदि में ही बताये हुये अपने धर्मों के बारे में जानना इनसान के पसंद ना पसंद पर आधारित हैं। प्रपंच का पूरा विधान, प्रपंच के कार्य सब इनसान के कर्म पर आधर होकर हो रहे हैं। तो सिर्फ एक दैवज्ञान ही कर्म से अतीत होकर, इनसान के श्रद्धा अश्रद्धा पर आधारित होकर हैं। दैवज्ञान पर इनसान को जितना श्रद्धा हो तो उतना ही वह मालूम करसकता हैं। इसलिये भगवद्गीता में ज्ञान योग अध्याय में ३९ श्लोक में **श्रद्धावान लभते ज्ञानम** कहा गया हैं। मनुष्यों को अपने अपने

श्रद्धा के मुताबिक ज्ञान हासिल होता हैं। ऐसा ही अपने अपने कर्मों के मुताबिक सुखदुख मिलते रहते हैं। **कर्म के प्रकार प्राप्त अप्राप्त, श्रद्धा के मुताबिक धर्मअधर्म हासिल होते हैं।**

ईश्वर तक पहुँचने केलिये मनुष्य को जो धर्म ज़रुरत हैं वे सबको ईश्वर ने सृष्ट्यदि में ही बतादिया उसके बावजूद, मनुष्य के अश्रद्धा से वे कालक्रम में अधर्मों की तरह बदल गये। भक्ति और आध्यात्मिक विधान में मनुष्य धर्म है समझकर अधर्मों को आश्रय किया हैं। यहाँ पर कुछ लोग एक सवाल पूछ सकते हैं। वह यह हैं कि!ईश्वर ने तो धर्मों को बतादिया ना! तो फिर अधर्मों को किसने बताया?कहकर सवाल पूछ सकते हैं। उसकेलिये हमारा जवाब यह हैं कि! अगर ईश्वर ने जो धर्म बतायें उनको ठीक से समझसके तो वे धर्मो की तरह ही रहते हैं। मनुष्य अश्रद्धा से अगर उनको अपार्थ करलिये तो धर्म ही अधर्मों में बदलजाते हैं। अधर्मों को कोई पैदा नहीं करसकता। धर्मों से ही अधर्म आरहे हैं। **ईश्वर बोलकर जाने के बाद जब धर्मों के बारे में वापिस बोलने वाले नहीं रहते हैं तो जब मनुष्य अपनी अश्रद्धा से धर्मों के बारे में पूरी जानकारी मालूम नहीं किया तो,धर्म ही अधर्म बनजाते हैं।** बाद में बताने वाले बोधकों से अधर्म ही प्रचार हो रहे हैं। जब अधर्मों को आफत पहुँच कर, अधर्म बढजा रहे हैं। ऐसी समय में ईश्वर ही अपने धर्मों को वापिस बताकर, अधर्मों का खंडन करना पडेगा। ईश्वर के धर्म के प्रकार हमने यह बयान करलिया कि ईश्वर काम नहीं करनेवाला हैं, क्रियारहित हैं। इसलिये ईश्वर मनुष्यों को अपने धर्मों के बारे में बताने का मौका ही नहीं हैं। तो यह सवाल पैदा होता हैं कि फिर अधर्म दबजाकर धर्म कैसे वापिस ऊपर आयेंगें। उसका जवाब इसतरह हैं।

जो (ईश्वर के बातें) अधर्मों में बदलगये हैं उनको वापिस धर्मों की तरह खायम करने केलिये, ईश्वर तीन तरीकों को पहले ही तै (निर्णय) करके रखदिया हैं। जब उसने सृष्टि को बनाया था तब ही उसने ये तीन तरीकों को भी तय्यार करके रखदिया। ईश्वर के धर्म क्या हैं यह बात ईश्वर के अलावा कोई नहीं जानता। इसीलिये कोई भी मनुष्य हो ईश्वर के विधान (धर्मों को) बता नहीं सकता। सब कुछ जानता हुआ ईश्वर भी अपने धर्मों के बारे में किसी को भी स्वयं नहीं बतायेगा। तो अब ऐसा शक पैदा होता हैं कि इधर मनुष्य भी न बताते हुये, उधर ईश्वर भी न बताये तो धर्म मालूम कैसे होंगें? इसके जवाब में हमने पहले ही बयान करलिया ना कि ईश्वर अपने धर्मों को बताने केलिये तीन विधानों का निर्णय करके रख्खा हैं! उसके प्रकार ईश्वर का निर्माण ऐसा हैं कि एक भगवान की तरह, दो प्रवक्ता की तरह, तीन आदरणकर्ता की तरह जो लोग आते हैं, वे ईश्वर के धर्मों को बताये जैसा (निर्माण किया गया हैं)। इसतरह दबे हुये धर्मों को वापिस यथास्थान में लानेकेलिये ईश्वर की अंश तीन तरीकों से आनाहोगा। ईश्वर के बेहिसाब करोडकरोडों के अंश हैं। उसमें से सिर्फ एक अंश ही तीन तरीकों से पैदा होकर,ईश्वर के धर्म बताती हैं। एक बार ज़मीन पर धर्म संपूण स्थायि में वापिस आना हैं। तो ईश्वर की अंश (ईश्वर नहीं सिर्फ ईश्वर की अंश) सिर्फ तीन तरीकों से पैदाहोकर कहना पडेगा। प्रवक्ता, भगवान, आदरण कर्ता कहलानेवाले सामान्य मनुष्य नहीं हैं। वे ईश्वर की अंश से पैदा हुये लोग हैं। अबतक हम लोगों को जो समाचार मालूम हुआ उसके प्रकार पहले भगवान आया हैं, बाद में प्रवक्ता आया हैं। अब आदरणकर्ता की ही बारी हैं। भगवान के बाद तीन हज़ार सालों के बाद प्रवक्ता आया तो, बाद में यह नहीं बता सकते कि आदरण कर्ता की आगमन कब हैं। आदरण कर्ता से संपूर्ण तरीके से ईश्वर के धर्म वापिस खायम होंगें। यह मालूम

हो रहा हैं कि ईश्वर की अंश तीन दफाओं में, तीन वक्तों में, तीन असाधारण व्यक्तियों की तरह,ज़मीन पर आरही हैं। ईश्वर पैदा होने वाला नहीं हैं फिर भी ईश्वर को नहीं बल्कि ईश्वर की शक्ति को करोडों के करोडों में क्यालरीस (भागों में) विभजित किये तो उसमें से सिर्फ एक कालरी की शक्ति (अंश) तीन अलग अलग वक्तों में, अलग अलग प्रदेशों में, अलग अलग जातियों में, अलग अलग नामों से पैदा होरही हैं। इसतरह भगवान की तरह,प्रवक्ता की तरह, आदरण कर्ता की तरह पैदा हुआ दैवांश संपूर्ण से धर्मों को वापिस खायम करसकती हैं। भगवान हो, प्रवक्ता हो, आदरण कर्ता हो जब आते हैं तो वे साधारण मनुष्य न होने पर भी,वे भी सब की तरह पैदा होकर शिशु दशा से बडे होकर साधरण मनुष्यों की तरह आरहे हैं। उनके भी माता पिता हर जनम में हैं। यहाँ पर तुमलोगों को सवाल न आये तो भी मुझे एक सवाल आया हैं। वह यह है! जो पैदा हुये वे तो साधारण मनुष्य नहीं हैं ना! वे तो ईश्वर की अंश से पैदा हुये है ना! ईश्वर ही जब सबका पिता है तो ईश्वर के अंश को भी वही धर्म लागू होती हैं ना! ऐसी सूरत में पैदा हुये भगवान को हो, पैदा हुये आदरण कर्ता को हो, पैदा हुये प्रवक्ता को हो क्या शरीर के माता पिता होते हैं? जब शरीर को पहन कर एक जोडी को पैदा होते हैं तो उनके लिये वह जोडि तो माता पिता ही होते हैं ना! ऐसी सूरत में जो खुद पिता हैं उसका पिता होता हैं क्या?यह सब सवाल मेरे है तो, इनके जवाबात देनेवाला मेरे पास शरीर में रहनेवाला आत्मा ही हैं। अब हम यह देखते हैं कि वह क्या कह रही हैं।

दैव (ईश्वर) हो, दैवाँश हो (ईश्वरकी अंश हो) एक ही धर्म रखते हैं। ईश्वर ईश्वर की तरह रहने पर भी, एक अंश की तरह रहने पर भी अपना धर्म नहीं खोता। इसलिये पिता हमेशा पिता की

तरह ही रहता हैं। पिता कभी भी अपने धर्म को खोकर दूसरों को किसी का भी बेटे की तरह नहीं बदलता। इसलिये ईश्वर की अंश भगवान को हो, प्रवक्ता को हो,आदरण कर्ता को हो शरीर का पिता नहीं रहता। वे दूसरे मनुष्यों के जैसा पिता के वीर्य से पैदा नहीं होते। इतना ही नहीं बल्कि माँ के गर्भ से जिसतरह सब निर्जीव से पैदा होते हैं वैसा पैदा हुये बगैर गर्भ से सजीव से पैदा होते हैं। ज़मीन पर रहनेवाले सब साधारण मनुष्य पिता के वीर्य से, माता के अंड से पैदा हो रहे हैं। तो जब ईश्वर की अंशा पैदा होती है तो उसका शरीर पिता के वीर्य से हो, माँ के अडं से हो बगैर संबंध के पैदा होते हैं। जब पिता के वीर्य से पैदा ही नहीं होता है तो उसे पिता ही नहीं रहता। अगर ऐसे पैदाहुआ दैवाँश से पूछेंगे कि तेरा पिता कौन हैं तो तब वह एक मनुष्य को अपना पिता कहे बगैर ईश्वर को पिता कहता है। इससे यह मालूम हो रहा हैं कि भगवान को हो, प्रवक्ता को हो, आदरण कर्ता को हो माता पिता नहीं रहते। ऐसे लोगों को **स्वयंभु** कहते हैं। स्वयंभु का मतलब स्वयं से पैदाहोनेवाला हैं या अपने आप पैदाहुआ हैं। यह मालूम हो रहा हैं कि माता पिता सिर्फ साधारण मनुष्यों को ही रहते हैं मगर असाधारण भगवान को हो, प्रवक्ता को हो,आदरण कर्ता को हो नहीं रहते। सामान्य मनुष्यों के शरीरों को तात्कालिक माता पितायें रहते हैं। तो यह बात साफ तौर पर जानलें कि सबके लिये शाश्वित माता पिता प्रकृती परमात्मा ही हैं।

वह समाचार के प्रकार जो अबतक हमें मालूम हुआ द्वापर युग के आखिर में भगवान, कलियुग में प्रवक्ता आकर गये जैसा मालूम हुआ हैं। प्रवक्ता की जन्म बिना शोहर के स्पर्शा के कन्या के गर्भ से हुआ हैं। इसलिये मालूम यह हो रहा है कि जो व्यक्ति प्रवक्ता की तरह पैदा हुआ हैं वह पिता के वीर्य से पैदा नहीं हुआ। अगर

श्रीकृष्ण की बात करें तो किसी को भी इसतरह का शक पैदा होसकता हैं कि जब भगवान श्रीकृष्ण पैदा हुये थे तो वसुदेव, देवकीदेवी माता पिता की तरह थे ना! इतना ही नहीं यह भी पूछ सकते हैं कि श्रीकृष्ण देवकी देवी के अष्टम संतान हैं ना! कृष्ण अष्टम संतान होने पर भी, बगैर पिता के वीर्य कण से पैदा हुआ, भगवान हैं। ऐसा ही यह बात किसी को भी नहीं मालूम कि माँ का अंड रिलीज़ होने से पहले ही सात दिनों के बाद देवकी देवी गर्भधारण की हैं। कृष्ण की वृषभलग्न जातक के (जाफतक के) प्रकार माता के बहिष्ट के बाद सात दिन के, सात घंटों को कृष्ण का शरीर बनना शुरु हुआ। माता का अंड १४ दिनों के बाद रिलीज़ होता हैं। अंड रिलीज़ होने से पहले ही कृष्ण का जन्म शुरु हुआ। इसलिये कहसकते हैं कि कृष्ण को माता पिता नहीं हैं। कृष्ण देवकी देवी गर्भ से पैदा होने पर भी, प्रपंच के नज़र में देवकी देवी माता की तरह कहीजाने पर भी, पिता की तरह वसुदेव को कहने पर भी, वह ईश्वर के अंश से पैदा हुआ है होने से उसके कोई माता पिता नहीं हैं। ऐसा ही दैवधर्म के प्रकार कृष्ण को आत्मसंबंध माता पिता भी नहीं हैं। धर्म के अनुसार देखें तो वही सबकेलिये पिता होता हैं। प्रवक्ता को हो, भगवान को हो,आदरण कर्ता को हो ऊपर से शरीर के माता पिता रहने पर भी यही कहना चाहिये कि वास्तव में वे माता पिता ही नहीं हैं। प्रवक्ता हो, भगवान हो, आदरण कर्ता हो कहते हैं कि हमसबका बाप परलोक में हैं इसतरह वे ऊपर से बात करते हुये कहने पर भी, वह बात हम पर लागू होती हैं लेकिन, उन पर लागू नहीं होती। वास्तव में सूत्र के प्रकार वे ही जगत के पिता है तो,ऐसा कहना असत्य होगा कि उनका बाप हैं। अगर प्रवक्ता मेरा पिता परलोक में हैं कहने पर भी वह हमारेलिये मार्गदर्शक हैं मगर और कुछ नहीं। इसीलिये एक संदर्भ में उन्होने ही कहा कि तुम्हारा पिता परलोक म हैं। बहरहाल, **ईश्वर को हो, ईश्वर**

की अंश को हो, शरीर के माता पिता हो, आत्म संबंध माता पिता हो नहीं रहते।

ज़मीन पर मनुष्यों को यह बात तक नहीं मालूम कि उनके दो खिसम के माता पितायें हैं। दो खिसमों के माता पिता के समाचार को पाँच हज़ार साल के पूर्व भगवान की तरह आयाहुआ कृष्ण भगवद्गीता में कहा हैं। फिर वही बाद में दो हज़ार साल के पूर्व प्रवक्ता की तरह आया था उस वक्त बैबिल में कहना हुआ। प्रस्तुत काल में हम भी बहुत बार दो खिस्मों के माता पिताओं के बारे में कहना ही नहीं बल्कि अब छोटीसी ग्रंथ की तरह **माता पिता** कहकर नाम रखकर लिख रहे हैं। हम कहना हि नहीं बल्कि आनेवाला आदरण कर्ता भी यही विषय को बतायेगा कह कर समझ रहे हैं। माता पिता कौन हैं यह विषय हर मनुष्य से रिलेटेड हैं। हर एक मनुष्य को यह विषय ज़रुर मालूम करना पडेगा। हर मनुष्य गलती से यह समझ बैठ रहा हैं कि अपने शरीर के माता पिता ही खुद के माता पिता हैं। इसलिये वह माता पिता के बारे में पूरा का पूरा भूलगया है ंजो पहले से मौजूद हैं। अगर अपने शाश्वित माता पिताओं के बारे में मालूम करने की कोशीष करें तो वही आध्यात्मिक होता हैं। आध्यात्मि कहें या ज्ञानमार्ग कहें वह खुद के माता पिताओं के बारे में मालूम करने वाली ही है मगर और कुछ नहीं हैं। दिखनेवाले माता पिता को तो सब जानते हैं,लेकिन नज़र न आनेवाले माता पिता शायद किसी को नही मालूम। **जिन माता पिताओं के बारे में नहीं जानते उनके बारे में जानना ही जीवित साफल्य हैं।**

हमने यह बयान करलिया ना कि **माता** यानि जो कार्य हैं, **पिता** यानि जिसके कारण यह सब बना। ऐसा ही जननी का मतलब पैदाकरनेवाली, जनका मतलब पैदाहुये जैसा करनेवाला। माता यानि

तुझे पालनेवाली, पिता यानि वह है जिसने यह कहा कि सबको पालता हूँ। इसतरह माता पिता कहें, जननी जनका कहें तो भी आत्मसंबंध के अर्थ ही दे रहे हैं। अब बयान किये हुये किसी भी शब्द में शरीर संबंध का अर्थ नहीं हैं। तो अबतक हमारे पुराणों में हो, कुछ स्वामीजियों के कहने में हो, देवताओं के कहानियों में हो, ज्यादातर शरीर के माता पिताओं की प्रस्तावना ही आयी हैं। एक मनुष्य की पैदायिश के कार्य कारण वाले माता पिता यानि प्रकृति परमात्माओं के बारे में कहीं भी किसी ने नहीं कहा। इसीलिये सबको शरीर के मातापिताओं के सिवा, आत्मसंबंध माता पितायें नहीं मालूम। **हमारे पुराण, शरीर के माता पिताओं के ऊपर भक्ति को बढायें मगर नज़र न आनेवाले माता पिता जो प्रकृती परमात्मा हैं उन पर भक्ति को नहीं बढायी। अब हम वह ज्ञान से शाश्वित माता पिताओं के बारे में मालूम करने की कोशीष करते हैं** जो पुराणों से, वेदों से अतीत हैं। सर्वजगत को आकार दी हुयी प्रकृतिमाता को, सर्वजगत की सृष्टी का कारण यानि पिता परमात्मा को मालूम करने से हमें मिलनेवाला फायिदा क्या हैं? इस बात पर गौर करें तो यह कहसकते हैं कि उनसे आनेवाला लाभ बेहिसाब हैं। ऐसा ही शरीर के माता पिताओं से क्या मिल रहा हैं उसके बारे में भी ज़रा बयान करलेते हैं।

शरीर को पहनकर जब पैदा होते हैं तो पहले आहार को दूध के रुप में देकर पालनेवाली माता ही हैं। इसलिये हर बच्चे को माता ही पहले मालूम हो रही हैं। शिशु दशा में पिता का विषय ही बच्चे को नहीं मालूम। उस दशा में बच्चे के लिये अत्यंत सन्निहित माता ही हैं। माता के सिवा किसी को भी न जानने वाले हालत से थोडा बडा होने के बाद भी कुछ और लोगों से मुलाकात होने पर भी वह यह नहीं जानता कि फलानावाला ही मेरा पिता हैं। शिशुदशा से बाल्य

दशा को आने के बाद यह मालूम हो सकता हैं कि यह पिता हैं। इसतरह बचपन में ही माता पहले,पिता बाद में मालूम हो रहे हैं। छोटे उमर में माँ (माता) से ज्यादा खरीब रहनेवाला मनुष्य, युक्त उमर से पिता को ज्यादा अहमियत देते हुये आता हैं। तीस या ।चालिस संवत्सरों के उमर से माता से भी पिता को ही पूरा खरीब में बदलजाता हैं। छोटे उमर में माता सब तरीकों से पालने पर भी, पिता दूर रहने पर भी, बडे उमर में तो माता को दूर करके पिता के खरीब होना सहज से हो रहा हैं। मनुष्य के जीवित में पहले माता की, बाद में पिता की अहमियत रहने पर भी, कुछ लोग तो ऐसे भी हैं जो अपने जीवित में पिता से भी ज्यादा माता को अहमियत दिये हो। चाहे कौन कैसे भी रहें यह कहसकते हैं कि वे शरीर के माता पिताओं के खरीब ही है, उन्हे सिर्फ उनके बारे में ही मालूम हैं। शरीर के माता पिताओं को इज्जत से देखते हुये उनको पालने से, उससे आनेवाला फलित पुण्य हैं। ऐसा ही उनको बेइज्जती से देखते हुये गालि दिये तो, उसके वजह से पाप आकर रहेगा। इसतरह भौतिक माता पिताओं के ओर मनुष्य की प्रवर्तन के प्रकार पाप पुण्य आते हैं। पाप पुण्यों को मिलाकर कर्मा कह रहे हैं। मनुष्य को संभव होनेवाला वह कोई भी कर्मा क्यों न हो उसे भुगतना ही पडेगा। इसतरह एक जन्म में किये हुये कर्मा को बाद वाले जन्मों में भुगतना होगा। कर्मा को भुगतने केलिय ही जन्म हो रहे हैं। कुल्लि तौर पर भौतिक माता पिताओं से पाप पुण्य संभव होना, फिर से उनको भुगतने केलिये जन्म लेना हो रहा हैं। शरीर के माता पिताओं से जन्मों से बाहर न आ सकके जन्मों में ही मनुष्य फस जा रहा हैं। **भौतिक संबंध माता पिताओं से जन्म साहित्य कहलानेवाली नष्ट होरहा हैं मगर जन्म राहित्य कहलानेवाली लाभ नहीं हो रहा हैं।**

आत्म संबंध माता पितायें यानि प्रकृती परमात्मा को मनुष्य जीवित में कितने हद तक मालूम किया हैं? अगर हम इस बात पर गौर करें तो सबको यह मालूम हो रहा हैं कि जब से मनुष्य पैदाहुआ तब से मौत तक प्रकृती आकाश, हवा, आग, पानि, भूमि कहलानेवाले पंतभूतों की तरह हैं। लेकिन बहुत से लोगों को यह नहीं मालूम कि आकाश, हवा, आग, पानि, भूमि जो पंतभूत हैं वे हमारे जिस्म में ही हैं। पंचभूतवाली प्रकृति से ही शरीर तय्यार होकर एक आकार को पाया हैं, एक आकार वाली शरीर को जिसने तय्यार करके रख्खा वह माता ही हैं इसतरह से प्रकृति सर्वमानवों की माता हैं कह कर मालूम हो रहा हैं। छोटे उमर में जिसतरह भौतिक माता को मनुष्य खरीब रहता हैं, उसीतरह हर मनुष्य उसको मालूम न होते हुये ही प्रकृति से खरीब हैं। जो कुछ दिखता हैं, जो कुछ सुनायी देता हैं जो कुछ ये पाँच इंद्रियों को मालूम होता हैं वह सब जब प्रकृती ही हैं तो, यह कहसकते हैं कि हर मनुष्य प्रकृती के खरीब ही हैं। लेकिन किसी को यह नहीं मालूम कि प्रकृती ही खुद को शरीर दी हुयी माता हैं। एक मनुष्य बडा होने के बाद जिसतरह भौतिक माता से भी ज्यादा अहमियत पिता को देता हैं, उसीतरह मनुष्य अपने जीवित में बडे उमर आने के बाद यह मालूम न होने से कि अपना पिता परमात्मा हैं, परमात्मा को अहमियत नहीं दे रहे हैं। चाहे कितना भी उमर क्यों न आजायें यह बात मालूम नहीं करपा रहा हैं कि प्रकृति माता हैं और परमात्मा पिता हैं। इसतरह ज़मीन पर ९० फीसद प्रजायें इस हालत में हैं कि खुद को यानि जीवात्मा को यह तक नहीं मालूम कि आखिर खुद (जीवात्मा) के माता कौन हैं,पिता कौन हैं। शाश्वित, सत्य माता पिताओं के बारे में अगर मालूम करना हैं तो, उनका पूरा समाचार मनुष्य को मालूम होकर रहना चाहिये। उस समाचार का ही दैवज्ञान कहते हैं। **जिस मनुष्य को भूमि पर दैवज्ञान नहीं मालूम चाहे वह**

कोई भी हो, उसको शाश्वित माता पिता मालूम नहीं होंगें। आज के समाज में ऐसे लोग हैं जो दैवज्ञान को कम नज़र से देखते हैं। ऐसे लोग भी मौजूद हैं कि दैवज्ञानी नाम सुनते ही उसे असमर्थ के नीचे हिसाब करते हैं। ऐसी समाज में आज किसी को भी दैवज्ञान पर श्रद्धा नहीं रहा। इसीलिये कोई भी यह नहीं जानता कि असल दैवज्ञान का मतलब क्या हैं, माया का प्रभाव मतलब क्या हैं? ज़मीन पर चाहे कितने भी मत क्यों न हो, उन मतों में स्वामियाँ, बोधक, गुरुयें रहने पर भी वे मत को ही प्रधान्यता दे रहे हैं। हंडी भर के साँबार में छोटे चमचे से बगारा डाले जैसा उनके बोधाओं में नाम मात्र दैवज्ञान रहता हैं। कुछ लोग वह थोडे ज्ञान को भी समझे बगैर, मत के विधोनों को ही ज्यादा अहमियत देने की वजह से यह किसी को मालूम नही हुआ कि ईश्वर का विधान क्या है। वे लोग बहुत ही कम रहते हैं जिन्हे ईश्वर का ज्ञान मालूम हैं। वे ईश्वर को पिता मान रहे हैं। लेकिन उन्हे यह बात ज़रा भी नहीं मालूम कि प्रकृति क्या चीज़ हैं, प्रकृती से पैदाहुयी माया क्या चीज़ है, माया मनुष्य के शरीर में कहाँ हैं, कौनसे रुपमें हैं, मनुष्य के अंदर माया मनुष्य को कैसे वहम में डाल रही हैं। जो लोग यह कहते हैं कि ईश्वर पर हम विश्वास रखते हैं, ईश्वर हमारा पिता हैं, हमारे मत के सिवा दूसरे मतों में ईश्वर पर विश्वास रखनेवाले बहुत ही कम हैं कह कर समझने वाले रहने पर भी, वे सिर्फ पिता के बारे में बोल रहे हैं लेकिन उन्हे माता के बारे में नहीं मालूम है कहसकते हैं। जब तक माता के बारे में मालूम नहीं होता तबतक पिता कौन हैं यह मालूम नहीं होगा। क्योंकि पिता कौन हैं यह बात सिर्फ माता ही जानती हैं। ईश्वर कौन हैं यह बात सिर्फ वह प्रकृती को ही मालूम हैं जो माया के रुप में हैं। इसलिये प्रकृती से बनीहुयी शरीर में गुण रुपवाली माया को जान कर, फिर

यह जानना चाहिये कि शरीर में वह कौन हैं, कहाँ हैं, क्या कर रहा हैं। इतना ही नहीं शरीर में होनेवाले काम कौन कर रहा हैं, शरीर के बाहर शरीर के द्वारा होने वाले काम कौन कर रहा हैं, पूरा ज्ञान रुप से जानना चाहिये। जब पूरा शरीर का यंत्राँग मालूम होजाता हैं तब ही इस बात का पता चलेगा कि माता प्रकृती किस तरह हैं। बाद में यह जानने का मौका मिलेगा कि परमात्मा किसतरह हैं। जिसतरह प्रपंच में माता के बिना भौतिक पिता को मालूम नहीं करसकते उसीतरह **माया जब तक मालूम नहीं होती तब तक अभौतिक परमात्मा को नहीं जानसकते। जब अभौतिक माता पिताओं के बारे में मालूम कर सके तो बाद में वो भौतिक माता पिताओं को पैदा नहीं होता। फिर से शरीर को पहन कर पैदा होने की जरुरत नहीं रहेगी।** जो कोई माता को जानजायेगा वह माता के द्वारा पिता के पास पहुँच जायेगा। परलोक में रहनेवाले पिता के पास जानेकेलिये माता के द्वारा ही मुमकिन हैं। जिसने माता को ठुकराया वह पिता को नहीं देख सकता। जिसने माता पिता को जानलिया वह कहीं भी पैदा नहीं होगा। इतने से जन्मराहित्य हो रहा हैं। वही मोक्ष या मुक्ति हैं। हम यह बता रहे हैं कि सब मतों या मज़हब के लोग यही विधान से पिता ईश्वर के पास पहुँचिये। **ऊँ माता पिताय नमः**

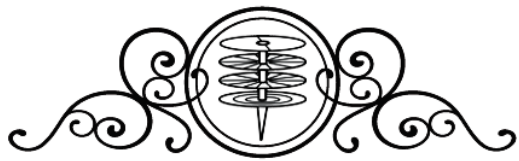

असत्य को हज़ार लोग कहने पर भी वह सत्य नहीं होता हैं,
सत्य को हज़ार लोग इनकार करने पर भी वह असत्य नहीं होता।

माता पिता

Author :

The Only GURU of Three Religions

The Spiritual Emperor, Thraitha Theorem Originator

Sri Acharya Prabodhananda Yogeeshwarulu